दिसम्बर 2014

दादावाणी

कीमत ₹ 10

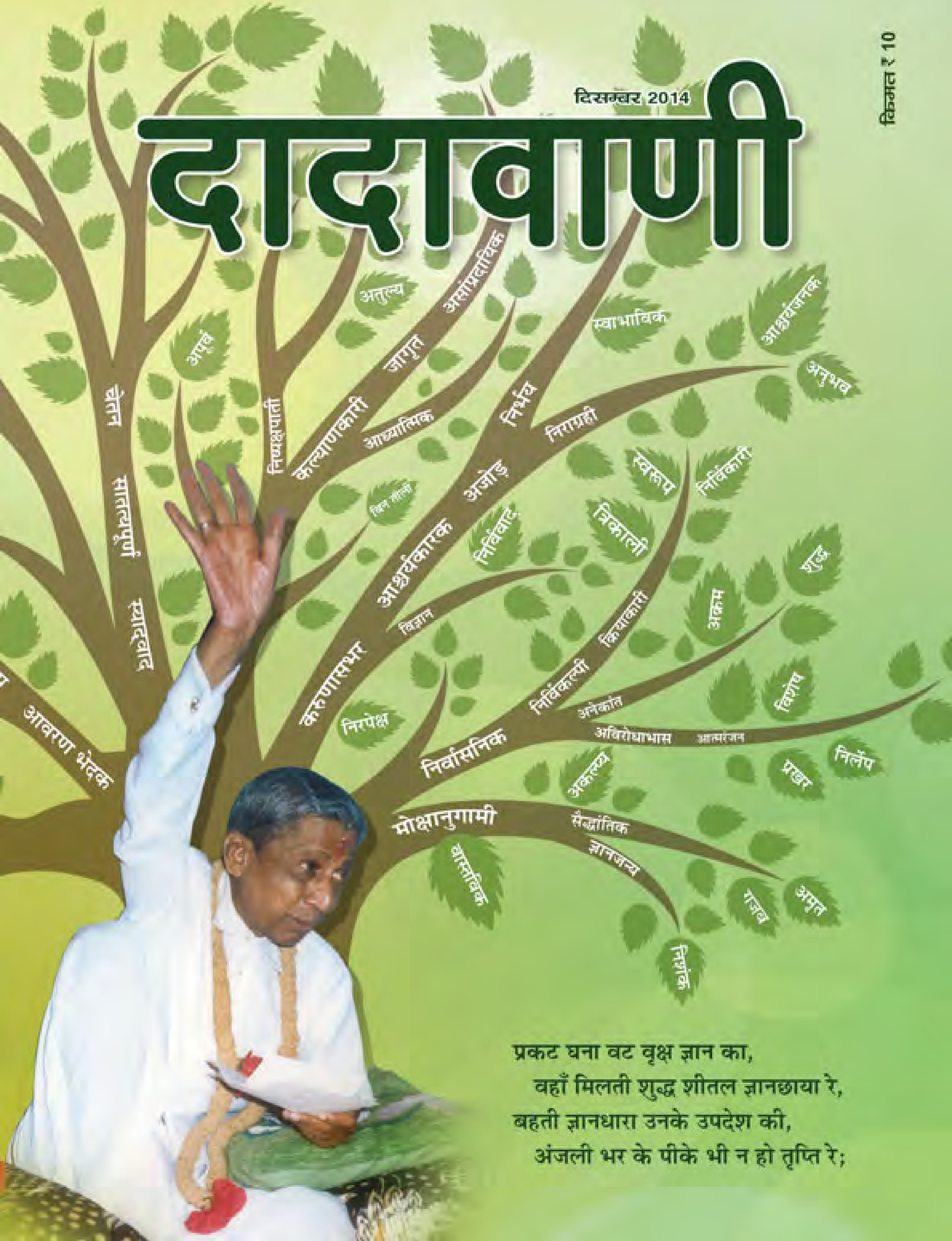

प्रकट घना वट वृक्ष ज्ञान का,
वहाँ मिलती शुद्ध शीतल ज्ञानछाया रे,
बहती ज्ञानधारा उनके उपदेश की,
अंजली भर के पीके भी न हो तृप्ति रे;

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : १० अंक : २
अखंड क्रमांक : ११०
दिसम्बर २०१४

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

अहो! अद्‌भुत वाणी ज्ञानीपुरुष की

संपादकीय

इस काल में ऐसे बेजोड़ ज्ञानीपुरुष परम पूज्य दादा भगवान भरत क्षेत्र में प्रकट हुए। ज्ञानीपुरुष की पहचान उनकी वाणी पर से ही होती है कि यही सच्चेमोक्ष दाता मूर्तिमान पुरूष हैं। उनके श्रीमुख से चार वाक्य सुनते ही आत्मा जागृत हो जाता है और उल्लास में आ जाता है। उनकी वाणी हर एक को अपनी खुद की ही लगती है। यह तो एक आश्चर्य ही कहलाएगा।

ज्ञानीपुरुष की वाणी पूरे जगत् के लिए हितकारी होती है। सर्व प्रकार के दु:खों से मुक्ति करवानेवाली होती है। उनकी वाणी रोग का विरेचन करवानेवाली होती है। संसार में क्या करने से दु:ख मिलेगा और क्या करने से सुख मिलेगा, उसके सार रूपी वाणी निकलती रहती है। शुभाशुभ की कशमकश में से निकालकर जो यहीं पर नकद मोक्ष देने का सामर्थ्य रखते हैं, ऐसे इन ज्ञानीपुरूष की वाणी असल भादरण की स्थानीय भाषा में, समझने में एकदम सरल और सुनने में मीठी और मधुर है।

उनकी वाणी स्याद्‌वाद है फिर भी कभी कभी सामनेवाले व्यक्ति का क्रोनिक रोग निकालकर उसे जागृत करने के लिए सख्त शब्दों का प्रयोग करते थे। उसके पीछे उनके बहुत प्रतिक्रमण भी रहते थे। ज्ञानीपुरुष में डाँटने के परमाणु नहीं होते लेकिन फिर भी यदि रिकॉर्ड बजे तब (लगता है) जैसे कि सामनेवाले का पुण्य जगा हो। फिर वे शब्द ही सामनेवाली व्यक्ति के रोग को खत्म कर देते हैं।

उनकी वाणी की विशेषता यह थी कि सामनेवाली की योग्यता के अनुसार उनकी वाणी निकलती थी। सभी के मन में जो प्रश्न होते थे उनके प्रतिस्पंदन उन्हें आते थे और उसके जवाब के रूप में तुरंत ही सहज वाणी निकलती थी, इसलिए फिर सब कहते कि, मुझे अभी जो पूछना था उसी का ही जवाब निकला। सामनेवाले के मन का समाधान हो उसी अनुसार उनकी वाणी निकलती थी और बाकी काम अपनी सिद्धिओं से होता रहता था।

ज्ञानीपुरुष के दर्शन के क्षण, उनकी हाज़िरी के क्षण और उनकी श्रुतवाणी सुनने के क्षण ही अत्यंत अमूल्य हैं। उनका मूल्य कैसे लगाया जा सकता है? ज्ञानीपुरुष के वाक्य के प्रति अहो भाव हो तो परमात्मा स्वरूप बनते जाएँगे! वह अहो भाव किस के प्रति है? ज्ञानीपुरुष के ज्ञान के प्रति।

ज्ञानीपुरुष का एक ही शब्द पकड़कर यदि हृदय में धारण करें तो वह मोक्ष तक पहुँचा दे, ऐसे ज़बरदस्त वचनबलवाली, निश्चय-व्यवहार दोनों को प्रतिपादित करती हुई दादाश्री की यह वाणी निकली है। जिसका संकलन करके आप्तवाणी, आप्तसूत्र और दूसरे अनेक ग्रंथों के रूप में हमें वह प्राप्त होती है। जिसका समझकर आराधन करने से पूर्णत्व की ओर पहुँचा जा सकता है। अंतिम दशा तक पहुँचने के ध्येय की प्राप्ति के लिए यह वाणी हमारे लिए ज़रूर सहायक होगी और साथ ही साथ दादाश्री की यह अमृतमय वाणी जो कि आत्मार्थ के सिवा अन्य किसी भी चीज़ के लिए नहीं निकली है, ऐसी आवरण भेदी, स्याद्‌वाद वाणी, युगों-युगों तक मोक्ष मार्ग के पथ को प्रकाशित करती ही रहेगी, ऐसी नि:शंकता से यह वाणी, जगत् के सर्व जीवों के अंतर को शांति दे, यही अंतर की अभिलाषा है।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

अहो! अद्‌भुत वाणी ज्ञानीपुरुष की

ज्ञानीपुरुष वर्ल्ड का आश्चर्य

ज्ञानीपुरुष दुनिया का आश्चर्य कहलाते हैं। ज्ञानीपुरुष अर्थात प्रकट दीपक कहलाते हैं।

प्रश्नकर्ता : ज्ञानीपुरुष को कैसे पहचानें?

दादाश्री : ज्ञानीपुरुष तो यों ही पहचाने जा सकें ऐसे होते हैं। उनकी सुगंध ही ऐसी होती है। उनका वातावरण कुछ और ही तरह का होता है। उनकी वाणी कुछ और ही प्रकार की होती है। उनके शब्दों पर से पता चल जाता है। अरे, उनकी आँखें देखकर ही पता चल जाता है। ज्ञानी के पास बहुत विश्वसनीयता होती है, ज़बरदस्त विश्वसनीयता! और उनका एक-एक शब्द शास्त्र रूपी होता है, यदि समझ में आए तो। उनके वाणी-वर्तन और विनय मनोहर होते हैं, मन का हरण कर लें, ऐसे होते हैं। यानी कि बहुत सारे लक्षण होते हैं।

आत्मा ही कबूल करता है, सत् ज्ञान को

प्रश्नकर्ता : लेकिन वे ज्ञानी हैं, ऐसा हम कैसे मानें?

दादाश्री : वैसा मानने की ज़रूरत ही नहीं है। आप उनके पास बैठो तो अपने आप ही समझ में आ जाएगा। मैं तो आपसे कहता हूँ कि मानना ही मत, अपने आप ही अंदर स्वीकार हो जाएगा। आप मानो या न मानो, लेकिन अपने आप ही आकर्षण उत्पन्न होगा। मानन का तो बाहर और कहीं होता है। संत क्या कहते हैं? 'श्रद्धा रखो, छ: महिने के लिए श्रद्धा रखो।' लेकिन हम आपको श्रद्धा रखने को नहीं कहते, श्रद्धा आपको आनी चाहिए। यदि हम डाँटें तो भी श्रद्धा आनी चाहिए, तभी उसे सच मानना।

स्टेन्डर्ड (कक्षा) का ज्ञान तो बहुत जानने मिलेगा, लेकिन आउट ऑफ स्टेन्डर्ड का भी जानना पड़ेगा न? और सिर्फ ज्ञान ही जानना है न, और क्या करना है? और उस ज्ञान को आपका आत्मा कबूल करे, उस तरह से जानना है। जिसे आत्मा कबूल नहीं करे उस बात को मानना ही नहीं चाहिए। दो प्रकार के ज्ञान हैं, स्टेन्डर्ड में मन कबूल करता है, स्टेन्डर्ड ज्ञान को आपका मन कबूल करे तो मानना चाहिए, बुद्धि कबूल करे तो मानना चाहिए। बाहर जो सत्संग होते हैं न....पूरे जगत् का सत्संग मानसिक सत्संग है। यानी उसका मन के साथ कनेक्शन (संबंध) है। यह मानसिक नहीं है, इसका कनेक्शन डायरेक्ट (सीधा) आत्मा के साथ है।

बाहर आप चाहे जहाँ जाओगे, आपका आत्मा कबूल ही नहीं करेगा, क्योंकि आत्मा कबूल कर ही नहीं सकता। क्योंकि सामनेवाला मनवाला है इसलिए आपका मन ही कबूल करेगा। वे मन से बोलते हैं और सुननेवाले मन से सुनते हैं। मन कबूल करता है। और यहाँ पर यदि आत्मा कबूल करे तभी मानना चाहिए।

ज्ञानी की आवरण भेदी वाणी

यह मैं जो बोलता हूँ न, तो सभी लोगों से कहता हूँ कि 'यदि तेरा आत्मा कबूल करे तो मानना,

वर्ना मत मानना।' तब वे कहते हैं, 'अब, आत्मा किस तरह कबूल करता है?' ज्ञानीपुरुष के पास जाने से। उनके शब्दों में वचनबल होता है। उनकी वाणी सिद्ध वचनवाली होती है, वह वाणी आवरण भेदी होती है, इसलिए आवरण तोड़कर ठेठ आत्मा तक पहुँचा सकती है। आवरण के अंदर होल (छेद) करके उसे ठेठ आपके आत्मा तक पहुँचा दे, ऐसी हमारी वाणी है और आत्मा द्वारा एक्सेप्ट (स्वीकार) होगी। आत्मा इसे एक्सेप्ट करता भी है। आत्मा भीतर गवाही देता है कि हाँ, बराबर है, करेक्ट है। खुद को भी समझ में आता है कि करेक्ट है तब वहाँ पर लोगों को विश्वास हो जाता है कि मेरा आत्मा कबूल कर रहा है। थोड़ी बहुत ऐसे गवाही दी है कि करेक्ट लग रहा है?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : कहीं दम नहीं घुट रहा है न? जो सच बात जानने का कामी हो, उसका दम नहीं घुटता। ज्ञानी का एक-एक शब्द एकदम से आरपार निकल जाता है, दम तो कभी भी नहीं घुटता। यह कोई रायणा (एक फल) नहीं है कि जिसको खाने से दम घुटे। ये तो ज्ञानी के वाक्य हैं, आरपार निकल जाते हैं। एक ही शब्द यदि हृदय में बैठ गया न, तो वह शब्द मोक्ष में ले जाएगा!

निरपेक्ष सत्य प्राप्त कराए आत्म तृप्ति

प्रश्नकर्ता : मेरा आत्मा यदि अज्ञानवाला हो तो कबूल नहीं करेगा न?

दादाश्री : नहीं, यदि अज्ञान होगा तब भी, हमारी वाणी ऐसी है कि आवरण तोड़कर और अंदर जाकर आत्मा तक पहुँचा देगी और हर एक शब्द एक्ज़ेक्ट कबूल होना चाहिए क्योंकि हमारी वाणी आवरण भेदी होती है इसलिए आत्मा पर जो आवरण है, उसे भेदकर, अंदर जाकर आपको वहाँ टच होती है। वर्ना आत्मा बात को पकड़ ही न पाए क्योंकि आवरणवाला आत्मा किस तरह पकड़सकेगा? इसलिए ज्ञानी हो तब वह वाणी आवरण छेदकर अंदर जाती है, टच होती है। और आत्मा उसे कबूल करता है कि 'यस, राइट'। (हाँ, ठीक है) मैं ऐसा भी कहता हूँ कि अगर कबूल नहीं करता तो 'तू टेढ़ा है। तू छिपा रहा है।' ऐसा भी मुँह पर बोल देता हूँ। आपका आत्मा कबूल करे ऐसा (जवाब) होना ही चाहिए।यह जवाब गलत है कि आपका आत्मा कबूल नहीं करता। हम तो निरपेक्ष सत्य बोलते हैं। भले ही तुम्हारी बुद्धि में न उतरे, तुम्हारा मन कबूल न करे लेकिन तुम्हारा आत्मा तो कबूल करता है न?

फिर दूसरा प्रश्न उठता है कि 'अब तक तो हमारा आत्मा कबूल करता था न, जहाँ जाए वहाँ ये बाहर की बातें भी?' नहीं, उन्हें आत्मा कबूल नहीं करता था, मन कबूल करता था। और जगत् में बाहर जो भी सुनोगे, वह वाणी बुद्धिशालियों की है। उससे मन को तो संतोष होगा जबकि यहाँ आत्म तृप्ति होगी। मन का संतोष और आत्म तृप्ति में फर्क है क्या?

प्रश्नकर्ता : अवश्य, बहुत फर्क है।

दादाश्री : तो यहाँ सीधी आत्म तृप्ति हो जाए ऐसा है। जब मन का कबूल करता है तो उससे मस्ती उत्पन्न होती है। मन कबूल करता है और मस्ती में आ जाता है। सुनता है और खूब मस्ती में आ जाता है। इमोशनल (भावुक) हो जाता है जबकि इसे सुनने से आत्मा का आनंद मिलता है, निराकुलता रहती है।

ज्ञानी की वाणी आत्मा को जगानेवाली

यह वाणी आत्मा को जगानेवाली है और आत्मा कबूल करे ऐसा है। बाहर जो भी वाणी सुनोगे, आचार्यों की - संतों की, सभी की वह मन की मस्ती करवानेवाली है, आत्मा को नहीं जगा सकती। जिनका आत्मा मुक्त हुआ हो चुका है, जो

खुद मुक्त हो चुके हैं वही औरों के आत्मा को जगा सकते हैं। आत्मा, ज्ञानी की हाज़िरी से ही जागृत होता है, वर्ना हो ही नहीं सकता। हमारा एक-एक शब्द आवरण भेदी होता है, इसलिए आत्मा जागृत हो जाता है और उल्लास में आ जाता है।

यह विज्ञान जो है न, वह सिर्फ सुनने के लिए है। इसे जब आप सुनोगे न, तो आत्मा के सारे आवरण तोड़ देगा, और जब तोड़ देता है उस घड़ी भगवान की कृपा उतरती है और तुरंत ही भगवान प्रकट हो जाते हैं।

आत्म जागृत होने पर प्राप्त होता है निराकुल सुख

हमारी हाज़िरी में आपका आत्मा जागृत हो जाता है इसलिए आपको कुछ ऐसा लगता है कि ओहोहो! कैसी निराकुलता लग रही है! आकुलता-व्याकुलता रहित निराकुल सुख प्राप्त होता है। वह आत्मा तक पहुँचता है इसलिए निराकुल सुख उत्पन्न होता है। उसमें मस्ती-वस्ती नहीं हैं। मस्ती तो बाद में उतर जाती है और यह निराकुल सुख हमेशा हेल्प करता रहता है। मन का एक्सेप्ट किया हुआ रहता नहीं हैं न! कितने दिन रहेगा?

इस वाणी से, आत्मा का आनंद आता है

मस्ती में और आनंद में कुछ फर्क है क्या?

प्रश्नकर्ता : बहुत फर्क है।

दादाश्री : हाँ, यहाँ आनंद आता है और वहाँ मस्ती आती है, क्रमिक मार्ग में।

प्रश्नकर्ता : यह जो आनंद है वह अतीन्द्रिय आनंद है क्या?

दादाश्री : हाँ, आनंद, आत्मा का आनंद। मस्ती में आनंद नहीं होता, मस्ती में मस्ती होती है, शांति, उच्च प्रकार की शांति। मस्ती! पूरा जगत् इसी मस्ती में डूबा है। आनंद सिर्फ यहीं पर चखते हैं, अक्रम विज्ञान के प्रताप से! कहीं और आनंद नहीं चख सकते।

पूरा जगत् मन से सुख ढूँढ रहा है, जब तक अहंकार है तब तक आत्मा का सुख तो मिलेगा ही नहीं। इसलिए मन से ढूँढता है मन की मस्ती। मस्त हो जाता है, मस्ती में ही रहता है, लेकिन मस्ती ऐसी चीज़ है कि उतर जाती है। मस्ती उतर जाए वह कैसा लगता है?

प्रश्नकर्ता : शराब का कैफ (नशा) चढ़े और उतर जाए, उसी तरह मस्ती चढ़ती है और उतर जाती है।

दादाश्री : उस तरह उतर जाता है, और यह आनंद उतर नहीं जाता। धीरे-धीरे-धीरे बढ़ता ही रहता है। अभी ये भाई आए न, अभी उन्हें अंदर जैसा आनंद उत्पन्न हुआ होगा, वैसा आनंद मेरी हाज़िरी में उत्पन्न होता है। चार ही वाक्य सुने न कि आनंद उत्पन्न हो जाता है। लेकिन यह आनंद आत्मा का ही है। इसका कारण क्या है? हम यह जो वाणी बोलते हैं वह आत्मा के आवरण भेदकर अंदर टच हो जाती है, इसलिए अंदर आत्मा का आनंद उत्पन्न होता है। इतनी विशेषता है कि हमारी हाज़िरी में किसी भी अज्ञानी मनुष्य को भी आत्मा का आनंद उत्पन्न होता है।

अहो! स्याद्वाद वाणी

जैसी किसी भी काल में नहीं मिली हो ऐसी वस्तु यहाँ है, और जैसी किसी के भी पास न हो ऐसी अलौकिक वस्तु है। बाहर तो सभी जगह पर लौकिक वस्तु मिलेगी, अलौकिक नहीं मिलेगी। ज्ञानीपुरुष की अलौकिक वाणी सुनें न, तो बेरोमीटर की ज़रूरत ही नहीं रहती। उनकी वाणी सभी ज्ञाति के, सभी जाति के लोगों को माफिक आती है। किसी को ऐसा नहीं लगता कि ये मुझ से हटकर कुछ कहना चाहते हैं। क्योंकि उनके पास सभी धर्मों का

सार होता है। वेदांत धर्म का, कृष्ण भगवान के धर्म का, महावीर भगवान के धर्म का, मुस्लिम धर्म का, सभी धर्मों का सार उनके पास होता है। इसलिए यहाँ उनके पास हर एक धर्मवाले का काम बन जाता है। धर्म के जितने भी पक्ष हैं, वे सभी पक्षवाले यदि यहाँ बैठे हो न, तो यह वाणी सभी को अपनी ही लगती है। स्याद्वाद वाणी होती है! सिर्फ उस वाणी पर से ज्ञानी पहचाने जा सकते हैं।

किसी के प्रमाण को ठेस नहीं लगाते

ज्ञानीपुरुष की वाणी से किसी भी जीव केप्रमाण को किंचित्मात्र भी ठेस नहीं लगती और यदि किसी के प्रमाण को ठेस पहुँचे तो वह उन्हें खुद के अंग को ठेस पहुँचने के बराबर लगता है।

तीन सौ साठ डिग्रियों पर सभी धर्म हैं इसलिए किसी भी धर्म का किंचित्मात्र प्रमाण, एक भी डिग्री को ठेस नहीं पहुँचे इस तरह का हमारा वर्तन चलता रहता है, सुख लगे ऐसा वर्तन। मुस्लिम धर्म को ठेस नहीं पहुँचती, क्रिश्चन धर्म को ठेस नहीं पहुँचती, इन्डियन को भी नहीं पहुँचती, न ही किसी और को ठेस पहुँचती है।

सभी धर्मवाले एकत्रित हों फिर भी हमारी बात से किसी को बिल्कुल भी तकलीफ नहीं होती। स्याद्वाद अर्थात् किसी भी धर्मवाले को उल्टी न पड़े। जिस में आत्मा है उसे बात सीधी सही तरीके से समझ में आ जाती है। भले ही वह मुस्लिम हो, जैन हो, श्वेतांबर हो, दिगंबर हो या कोई भी हो, लेकिन भगवान की वीतरागी बात सभी के काम आती है।

वाणी लगे सभी को अपनी

ज्ञानी की वाणी कैसी होती है? परेच्छानुसारी होती है। हाँ, वे औरों की इच्छाओं के आधार पर बोलते हैं। औरों की इच्छाएँ पूर्ण हों इसलिए वे बोलते हैं। वर्ना उन्हें क्यों बोलना पड़े? बल्कि उनकी वाणी, स्याद्वाद वाणी, सुनते रहने का मन करता है।

स्याद्वाद वाणी उसे कहते हैं कि सभी धर्मवाले हँसी-खुशी से सुनें। ज़ोर-ज़ोर से भगवान के शास्त्र पढ़े जाते हैं, लेकिन सिर्फ उसी धर्म के लोग सुनते हैं, औरों को अच्छी नहीं लगती।

प्रश्नकर्ता : स्याद्वाद नहीं मानी जाती?

दादाश्री : लेकिन (यह हमारी वाणी तो) सिर्फ जैनों को ही कबूल हो ऐसी नहीं है, लेकिन जैनों को और जैनों के सभी वर्गवालों को, वैष्णव और वेदांतियों के सभी वर्गवालों को और मुस्लिमों को भी अच्छी लगे। छोटे बच्चों को भी, जो धर्म को समझते तक नहीं है उन्हें भी अच्छी लगे। वृद्ध स्त्रियाँ जो पढ़ी-लिखी नहीं हैं, उन्हें भी अच्छी लगे, डेढ़ साल के बच्चे को भी अच्छी लगे। तब समझना कि यहाँ वास्तविक धर्म है और स्याद्वाद वाणी है। बच्चे अगर उठकर चले जाएँ और रोने लगे (पाँच साल के बच्चे), तब समझना कि यहाँ सही मार्ग नहीं है। क्योंकि (स्याद्वाद वाणी हो वहाँ) वातावरण आनंदवाला ही होता है, इसलिए बच्चे वहाँ से उठते ही नहीं। समझदारी की ज़रूरत ही नहीं है। समझ में आया या नहीं आया उसकी ज़रूरत नहीं है। ज्ञानीपुरुष की यह वाणी सभी की समझ में आ ही जाती है। अपनी-अपनी भाषा में, लेकिन एक्ज़ेक्टनेस में (यथातथ्य) उसे समझ में आ जाता है।

ज्ञानी की वाणी, निष्पक्षपाती

हमारी वाणी निष्पक्षपाती होती है इसलिए हर एक को अपनी ही लगती है, कि मेरी अपनी निजी है, ऐसी लगती है। मतलब इसमें देखो, क्रिश्चियनों ने भी मोक्ष (ज्ञान) लिया है, फिर अन्य में मुस्लिम, पारसी, वैष्णव, शिव धर्मी और स्वामी नारायणवाले हैं, और जैन तो बहुत सारे हैं।

एक ब्राह्मण मुझ से पूछ रहे थे कि आप

गायत्री को मानते हैं। अरे! गायत्री मेरे मुखारविंद से ही, निकली है, तो क्या मैं गायत्री का विरोधी हो सकता हूँ? जिनके मुख से निरंतर सरस्वती वाणी निकलती है, वह अहिंसक वाणी होती है।

अपूर्व बात यह ज्ञानी की

मतलब यह तो एक आश्चर्य है। यह शास्त्र की बात नहीं है, शास्त्र से बाहर की बात है। किसी भी शास्त्र में नहीं मिलेगी। शास्त्र तो 'दिस इज़ नॉट देट, दिस इज़ नॉट देट' (यह वह नहीं है, यह वह नहीं है) इतना कहकर रुक जाते हैं।

मैं तो यह सब देखकर कहता हूँ, बिल्कुल सही बाते हैं। भले ही बिल्कुल नई लगें, क्योंकि यह अपूर्व बात है। पहले सुनी नहीं हो, पढ़ी नहीं हो, देखी नहीं हो, जानी नहीं हो, अनुभव नहीं की हो, ऐसी अपूर्व बात है! फिर से यह कभी किसी काल में नहीं मिलेगी। फिर से ये बातें सुनने को नहीं मिलेंगी। थीं भी नहीं, ऐसी अपूर्व बातें हैं ये, इसलिए काम *निकाल* (निपटारा) लो आज।

यह वाणी कैसी? बिन तोली, बिन नापी

ऐसी बातें तो बाहर होतीं भी नहीं। ऐसी बातें सुनी नहीं होतीं, पढ़ी नहीं होतीं, ऐसी नई बातें हैं ये। क्योंकि यह अंतिम घर की बात है, जहाँ अबुध पुरुष बात कर रहे हैं, जिनमें बुद्धि सेन्ट (एक प्रतिशत) भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : आपकी वाणी सामान्य वाणी की तुलना में किस तरह अलग है?

दादाश्री : यह जो एक-एक वाक्य है, वैसा तो अगर सामान्य मनुष्य तीन घंटे तक बोले तब भी ऐसा नहीं हो सकता। तीन घंटें का हिसाब निकाले तब भी इसके एक वाक्य के बराबरी नहीं कर सकता। उसे तौलना आना चाहिए न! उसे मेज़र (नापना) आना चाहिए। यह वाणी कैसी है? बिन तौली और बिना नाप की है। यदि बुद्धि से नापने जाए न तो उसकी बुद्धि ही फ्रेक्चर हो जाएगी, ऐसी है यह वाणी। बुद्धि से नापी जा सके, ऐसी वाणी नहीं है यह। यह बुद्धि रहित वाणी है और मालिकी रहित वाणी है। फर्क नहीं होगा क्या, मालिकीवाली और मालिकी रहित वाणी में? वह बुद्धिवाली वाणी और यह बुद्धि रहित वाणी में फर्क है क्या?

किस तरह का फर्क है, इतना ही पूछना चाहते हो या और कुछ? और तो बहुत कुछ है। अन्य कहीं तो यह हो ही नहीं सकती न! यहाँ पर तो अगर हमारा एक ही वाक्य हो न तो उस पर दस पुस्तकें बन सकती हैं। यदि मैं आपको एक ही पुस्तक 'भुगते उसी की भूल' दूँ, तो उस पर इतनी बड़ी पुस्तक बन सकती है।

कैसी आश्चर्यजनक वाणी!

यह वाणी तो अनंत जन्मों की है, एक जन्म की नहीं है, मिथ्यात्व के भयंकर रोग को फ्रेक्चर कर देती है और वह भी अहिंसक तरीके से। उस पर इन दादा को भी आश्चर्य होता है न!

हमारी बात संपूर्ण और आश्चर्यजनक होती है इसलिए लोग कहते हैं कि हिप्नोटिज़म (सम्मोहन विद्या) है। यह हिप्नोटिज़म नहीं है। हिप्नोटिज़म का असर तो घंटे दो घंटें ही रहता है। इससे तो आपको निरंतर परमानंद और शुद्धात्मा का भान रहता है।

अनुपम वाणी

तीर्थंकरों की बात कृपालुदेव ने कही है कि

'अनंत अनंत भाव भेदथी भरेली भली,
अनंत अनंत नय निक्षेपे व्याख्यानी छे,

सकळ जगत हितकारीणी हारीणी मोह।
तारीणी भवाब्धि मोक्षचारिणी प्रमाणी छे!

उपमा आप्यानी जेने तमा राखवी ते व्यर्थ,
आपवाथी निज मति मपाई में मानी छे।

अहो! राजचंद्र, बाळ ख्याल नथी पामता ए,
जिनेश्वर तणी वाणी जाणी तेणे जाणी छे।'

मोह का हरण कर ले। पूरे जगत् के लिए हितकारी हो। जिसे उपमा देने पर देनेवाले की मति नप गई, मूरख की तरह। उपमा नहीं देनी चाहिए। किसकी वाणी को तू उपमा दे रहा है?

उपमा भी दे देते हैं, किसी बड़े ज्ञानी की। अरे, बड़ा-छोटा मत बोलना। जो अलौकिक है, वह उपमा के योग्य नहीं है। *'निज मति मपाई में मानीछे'* उसी की बुद्धि नप गई, अगर इस वाणी को नापा कि आचार्य जैसे लगते हैं, तो उसी की बुद्धि नप गई। जो वाणी, सर्वस्व दु:खों को मिटाए, सर्वस्व प्रकार के मोह ले ले, वह वीतराग की वाणी है।

अतुल्य है ज्ञानी की यह वाणी!

यह किसी से तुलना करने जैसी चीज़ है ही नहीं। यह सिमिली में रखने जैसी चीज़ ही नहीं है। सब अपनी-अपनी भाषा में बोलते हैं। समझ में नहीं आता इसलिए मान लेते हैं कि इसके जैसी है, और उसके जैसी है। इस पुस्तक में लिखा है उसके जैसी है। हो ही नहीं सकती यह वैसी। यह तो अपूर्व वाणी है। यह परंपरागत बात नहीं है। पहले कभी भी परंपरा में नहीं आई ऐसी है यह वाणी! जगत् में अन्य कहीं भी नहीं हो सकती। इस वाणी का एक अक्षर भी नहीं हो सकता, एक परसेन्ट (प्रतिशत) भी नहीं हो सकता! ज्ञानीपुरुष के सभी वाक्य स्वतंत्र होते हैं। किसी और की नकल नहीं होती, उनकी, शैली निजी होती है, त्रिकाल सत्य होता है!

अद्भुत है यह ज्ञानवाणी!

कोई व्यक्ति यहाँ पर आया। एक शुद्ध सोने का गहना और एक रोल्ड गोल्ड का गहना लेकर आए और अगर कहे कि दोनों समान हैं, तो जानकार व्यक्ति उससे क्या कहेगा? दिखने में तो दोनों एक से ही दिख रहे हैं। एक से दिखते हैं, अनुभव में भी आते हैं, सब है, लेकिन उससे कुछ नहीं होगा। कोई इतनी हद तक का फर्क नहीं बता सकता। मनुष्य का सामर्थ्य नहीं है। हाई क्वॉलिटी की दादाजी की इस वाणी से तुलना करने की शक्ति किसमें हैं? एक भी व्यक्ति ऐसा ढूँढ लाओ, जिसमें कि ऐसी शक्ति हो। यह वाणी अद्भुत है! सरस्वती है यह तो! प्रत्यक्ष सरस्वती! इसकी तुलना कैसे कर सकते हैं? उसके एक वाक्य की भी किसी के साथ तुलना नहीं की जा सकती, वर्ल्ड में कहीं पर भी नहीं की जा सकती। यह वाणी तो ग़ज़ब की है! अन्य कोई वाणी उगती नहीं है (परिणाम नहीं मिलता)। अनंत जन्मों से कितनी ही वाणी खेतों में बोते रहे हैं लेकिन एक भी शब्द नहीं उगा जबकि इसका तो एक-एक शब्द उग निकलता है।

यह वाणी तो एक आश्चर्य है, इस काल का! लेकिन अब यह मूल और वह रोल्ड गोल्ड, दोनों में फर्क न समजे तो हम उसके साथ लड़ तो नहीं सकते न?

अत: यह अलग चीज़ है। मैं खुद ऐसा कहूँतो बुरा दिखेगा। लोग कहें, तो ठीक है। लेकिन यह तो मुझे खुद कब कहना पड़ता है? आप कहो कि 'आप खुद कुछ कहिए,' तब कहना पड़ता है, नहीं तो ऐसा कुछ कहने का कोई अर्थ ही नहीं है न! 'सही-गलत' मैं बोल नहीं सकता और फिर भी अगर बोलना पड़े तो मुझे हर्ज नहीं है। क्योंकि यह वाणी मेरी नहीं है। यह टेपरिकॉर्ड है। तौली न जा सके ऐसी है। यदि कोई इस वाणी को ज़रा सा किसी और बात से नापने जाए तो उसी की बुद्धि नाप जाए। एक ही शब्द से यदि नापने जाए तो उसकी बुद्धि नप जाए। उसे बुद्धि से फेल कहते हैं। बोलो अब, ऐसी है यह वाणी तो! कहाँ बाह्य वाणी, रिलेटिव वाणी और यह जो वाणी निकलती है न, वह रियल-रिलेटिव है। दोनों का तार जोड़ देती है।

नि:शंक बात मिले, यहाँ ज्ञानी के पास

ये ज्ञानीपुरुष जो कि नित्य मुक्त हैं, नित्य

समाधिवाले और नित्य आत्मा हो चुके हैं। जिनका पूरा अनित्यपना सर्वथा छूट चुका है। सनातनपना प्राप्त हो गया है। उन्हें देखा नहीं, दर्शन नहीं किए, उनका एक शब्द भी नहीं सुना है, यदि एक ही शब्द सुने तो कल्याण हो जाए।

हमारी यह वाणी उच्चतम है। इससे आगे और कोई बात है ही नहीं। जगत् ने भी बहुत समय से देखी नहीं है, सुनी नहीं है इसलिए यह बात कर रहा हूँ। और किसी धर्म के पुस्तकें पढ़ना, लेकिन पुस्तकें बहुत हेल्प नहीं कर पाएँगी, वे लाइट नहीं देंगी (ज्ञानरूपी प्रकाश) नहीं देंगी। उसके लिए प्रत्यक्ष की ज़रूर पड़ेगी। पुस्तकों में सही बात नहीं होती। पुस्तक में तो कुछ हद तक बात सही है। लेकिन बेहद (हद पार) वाली बातें पुस्तक में नहीं समा सकतीं। पुस्तको में तो कुछ लिमिट (मर्यादा) तक की बातें ही हैं। यानी कि हमारे पास बेदह की बातें हैं।

ऐसी कोई बात नहीं है जो कि ज्ञानी के ज्ञान से बाहर हो। मैं देखकर बोलता हूँ। यह कोई पुस्तक की बात नहीं है। पुस्तक का काम नहीं आता न! पुस्तक की बातें हमेशा जड़ होती हैं। पुस्तक में से आपने ग्रहण की हुई चीज़ें होती है, वे क्या होती हैं? वे जड़ होती हैं। डायरेक्ट (सीधा) होना चाहिए। डायरेक्ट प्रकाश होना चाहिए, तभी हल निकलेगा।

अंतिम स्टेशन की बात

पूरे जगत् के सभी धर्मों, जैनों के चार आगमों में, चार वेदांत और गीता में समाए हुए हैं। औरहमारी यह बात जैनों के चार आगमों से परे, वेदांत से परे और गीता से भी परे हैं। हमारी बात नि:शब्द (बुद्धि से परे) हैं। वर्ल्ड में हमारी यह बात अंतिमटॉपमोस्ट है। मैं तो अंतिम बात कर रहा हूँ, इससे आगे की नई बात और कहीं भी नहीं निकलेगी। अंतिम बात से आगे अंतिम हो ही नहीं सकती न! अंतिम के बाद अंतिम नहीं हो सकती। हमारी बात पुस्तकों में से नहीं है, हम ज्ञान में देखकर बोलते हैं। बहुत सूक्ष्म हैं ये सभी बातें। ये अंतिम स्टेशन की बातें हैं, लास्ट स्टेशन! यहाँ से आगे और कोई स्टेशन नहीं है, यहाँ पर रेल्वे बंद हो जाती है (खत्म हो जाती है)।

जो अंतिम स्टेशन होता है, वह प्रश्नोत्तरी के रूप में होता है। यानी प्रश्नोत्तरी मतलब लास्ट स्टेशन कहलाता है। और कहीं पर प्रश्नोत्तरी नहीं होती। यह प्रश्नोत्तरी अंतिम ज्ञान कहलाता है, जो अंतिम स्टेशन पर उतारता है। अंतिम स्टेशन पर प्रवचन नहीं होता। और प्रवचन मतलब बीच के स्टेशन पर घूमते रहना। यह प्रवचन तो आप सुनते रहो और कान में ज़ंग लगता जाता है। चालीस सालों तक सुनता रहे न फिर भी जैसा था वैसे का वैसा। बल्कि और ज़्यादा बिगड़ जाता है!

प्रवचन तो अनेक जन्मों तक सुनते रहे, लेकिन उससे ज़रा सा भी मैल नहीं छूटा। सिर्फइतना ही है सुनता है। इसलिए यहाँ पर सारे प्रश्न पूछकर अपना खुलासा कर लो तब मन का समाधान होगा, तब हल आएगा, वर्ना इसका हल नहीं आएगा। यानी प्रश्न पूछने से सभी खुलासे हो जाते हैं। यहाँ पर सबकुछ पूछ सकते हो। लेकिन जो भी जवाब दें, उन पर अगर शंका करोगे तो फिर भटक जाओगे। हमें कोई परेशानी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वो तो शंका करनेवाले को ही नुकसान है।

दादाश्री : नि:शंक विज्ञान, जहाँ चौबीस तीर्थंकर बोल रहें हों ऐसी वाणी है यह। तीर्थंकर और इनमें (ज्ञानी में) फर्क नहीं मानना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : इस तरह प्रश्नोत्तरी करना तो मुश्किल बात है।

दादाश्री : और कहीं पर ऐसी प्रश्नोत्तरी नहीं होती। ये तो संपूर्ण ज्ञानी हैं इसलिए है प्रश्नोत्तरी, वर्ना प्रश्नोत्तरी का मतलब लोग सर फोड़ दें। पूरी

दुनिया में कहीं पर भी प्रश्नोत्तरी का रिवाज़ नहीं है।प्रश्नोत्तरी कहाँ होती है, जैसे कि कृष्ण भगवान ने सिर्फ अर्जुन से ही कहा था कि 'तू पूछ'। वर्ना दो-तीन पूछनेवाले हों तो परेशान कर देते उनका। और महावीर भगवान के यहाँ उनके ग्यारह गणधर थे, वे ग्यारह भी सवाल पूछते और भगवान सारे खुलासे देते थे।

उसी तरह यहाँ पर भी प्रश्न पूछो और आपको उनके खुलासे मिलते हैं। एक ही प्रश्न पूछो तो कितना सब, आपको फिर से नहीं पूछना पड़ता। यों ही सब (बातें) निकलती रहती हैं। आप सिर्फ निमित्त ही कि 'भाई अब हमें यह बताइए।' क्योंकि मैं खुद यह नहीं बोलता। यदि मैं खुद बोल रहा होता तो फिर प्रवचन देता, लेकिन यह तो टेपरिकॉर्डर है, ओरिजिनल टेपरिकॉर्ड है। आपने पूछा कि तुरंत ही बजनी शुरू हो जाती है।

प्रकट पुरुष की वाणी, पापों को क्षय करनेवाली

ज्ञानीपुरुष की वाणी सुनते ही मन प्रफुल्लित हो जाता है और पाप क्षय हो जाते हैं। फिर बाकी क्या रहा? कृष्ण भगवान ने कहा कि 'ज्ञानीपुरुष ही मेरा आत्मा है।' और वे जो चाहें सो कर सकते हैं। पाप भी भस्मीभूत कर सकते हैं। खुद अपने आपकोई पाप नहीं धो सकता।

पुण्य आनंदित करता है और पाप दु:ख देता है। पुण्य और पाप से ही सुख और दु:ख हैं और वे फिर कल्पित हैं। पुण्य कष्ट नहीं देता और पाप कष्ट देता है, तकलीफ देकर जाता है। ज्ञानीपुरुष जब ज्ञान देते हैं तब पापों को जला देते हैं, तब फिर मोक्ष हो जाता है। मेरी ये बातें सुनने से ही सर्व दु:ख चले जाते हैं। समझने से ही सर्व दु:ख चले जाते हैं। तमाम प्रकार के दु:ख यहाँ पर निवृत्त हो जाने चाहिए। जहाँ तमाम प्रकार के दु:ख निवृत्त हो जाएँ, उसे आत्म धर्म कहते हैं।

जो वाणी सर्व दु:खों को मिटा दे, सर्व प्रकार के मोह ले ले उस वीतरागी वाणी को सुनना तो पड़ेगा न? सुनेंगे तभी हल आएगा न?

असंग शस्त्र से छेदा जा सकता है संसार वृक्ष

प्रश्नकर्ता : गीता में कृष्ण भगवान ने ऐसा कहा है कि 'असंग शस्त्र से इस संसार वृक्ष का छदन किया जा सकता है,' तो इस बात का अर्थकहीं भी समझ में नहीं आया, तो आप इसे समझाइए।

दादाश्री : हाँ, इसे असंग वाणी से समझाया जा सकता है। असंग वाणी होनी चाहिए। असंग शस्त्र, असंग वाणी से समजाया जा सकता है।जिस वाणी का कोई मालिक नहीं हो, उसे असंग वाणी कहते हैं। जो वाणी मालिकीवाली नहीं हो वह सारी असंग वाणी कहलाती है। वाणी तो निकलेगी, लेकिन उसका मालिक नहीं होता। मालिकी रहित वाणी देखी है कहीं?

प्रश्नकर्ता : अभी तक तो मालिकी रहित वाणी नहीं देखी। जब तक शरीर है, तभी तक वाणी रहती है।

दादाश्री : तभी तक वाणी। उसके बाद वाणी नहीं रहती। शरीर के होते हुए भी (असंग) वाणी हो, मालिकी रहित हो तब काम चलेगा। शरीर हो तभी वाणी रहती है, वर्ना वाणी कहाँ से लाए? अत: यदि शरीर मालिकी रहित हो जाए.....

प्रश्नकर्ता : तो अहम नष्ट हो जाता है?

दादाश्री : यदि अहम नष्ट हो जाए तभी तो वाणी मालिकी रहित होगी न! और तभी वे असंग वाणी कहलाएगी। तब उसका असंग शस्त्र उत्पन्न होता है।

अब असंग कहाँ मिलेगा? खुद संगवाला है तो असंग कैसे मिलेगा? यानी हमारी यह वाणी असंग कहलाती है। मालिकी रहित वाणी असंग

कहलाती है, मालिकी रहित देह असंग कहलाती है और मालिकी रहित मन भी असंग कहलाता है। तो ऐसी असंग वाणी से सारा काम हो सकेगा।

जैसे रोग वैसी ही वाणी निकलती श्रीमुख से

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आपने जो समझ दी है उससे मानो जैसे रेशम की गाँठ छूट (खुल) जाती है न, उसी तरह लगभग सारी गाँठें छूट जाती हैं।

दादाश्री : मेरी यह वाणी है ही ऐसी कि जो सारी गाँठें खोल दे। मन में जितनी गाँठें बाँधी हुई हैं, वे सारी खुल जाती हैं। मन का विलय करने के लिए तो यथार्थ दवाई चाहिए, तभी विलय होगा। ज्ञानी के अलावा और कहीं पर भी यह दवाई नहीं मिल सकती। इस (काल में) मनुष्य को बहुत प्रकार की *अटकण* (जो बंधनरूप हो जाए) होती हैं। इसलिए इन सब को निकालने के लिए हमने हर तरह की दवाईयाँ रखी हैं। अक्रम विज्ञान के दवाखाने में कई दवाईयाँ हैं!

अंदर जो टाँकें (गुत्थियाँ) पड़ गई हैं, वे किसी से भी नहीं टूट सकतीं, उन्हें दादा तोड़ देते हैं। और दादा की वाणी ऐसी निकलती है कि जिसे जैसा रोग होता है वैसी ही वाणी सहज रूप से निकलती है।

अकल्प्य निर्विकल्पी वाणी

हमारी वाणी विकल्पी नहीं होती। इस जगत् में जो भाषण होते हैं वे विकल्पी हैं। सब बुद्धि के विकल्प हैं। वाणी तो पर है और पराधीन है। हम से यदि कोई कुछ पूछे तो वाणी निकलती है।

ज्ञानीपुरुष की वाणी अकल्पी होती है और हाथ से छूकर सामनेवाले के क्रोध-मान-माया-लोभ निकाल देती है। शुभाशुभ की पकड़ निकालकर यहीं पर नगद मोक्ष दे देते हैं। यह पूरा शॉर्ट कट है।

अज्ञान का विरेचन करवानेवाली वाणी

प्रश्नकर्ता : कृपालुदेव ने कहा है कि 'हमारी वाणी वचनामृत है,' इसका क्या मतलब है?

दादाश्री : ज्ञानी की वाणी वही वचनामृतहै और वह अज्ञान का विरेचन करवानेवाली है। ज्ञानी की जो वाणी डायरेक्ट निकलती है वही वचनामृत कहलाती है, और वही वाणी यदि पुस्तक में हो तो वह जड़ कहलाती हैं। हमारा डायरेक्ट शब्द (वाणी) वह तो वर्ल्ड का आश्चर्य है!

ये शब्द अहंकार का विरेचन करवानेवाले हैं, विषय का विरेचन करवानेवाले हैं, बुद्धि का विरेचन करवानेवाले हैं और ममता का विरेचन करवानेवाले हैं।

मेरा वचन निकले तब कपट का पर्दा टूट जाता है। मैं यदि किसी से कुछ पूँछू तो जो भी हो वह मुझे सच-सच बता देता है।

वैराग्य लानेवाली वाणी

ज्ञानीपुरुष के मुख से यदि एक ही बार वैराग्य वाणी सुन ले तो वास्तविक वैराग्य जन्म ले ऐसा है। (वे) बोलें न तो अगर दो सौ-पाँच सौ टेढ़े-मेढ़े (उल्टे,बुरे) लोग बैठे हों न, तो उन्हें वैराग्य आ जाए। क्योंकि बोल भी इतने सटीक निकलते हैं कि, उन सभी टेढ़े-मेढ़े लोगों को भी वैराग्य आ जाए कि, संसार में क्या रखा है? हज़ारों साल पुस्तक पढ़ने से भी जो वैराग्य नहीं आता, वह दादा के सिर्फ पंद्रह मिनट के सत्संग से सभी को वैराग्य आ जाता है। हमारी बात में इतनी शक्ति होती है कि यदि कोई चक्रवर्ती राजा हो तो वह भी राज्य छोड़ दे।

हमारा ज्ञान अर्थात संसार का सार निकाल लिया होता है। हमारा यह ज्ञान तो संसार का सार है कि क्या करने से दु:खी और क्या करने से सुखी, उसका सार निकाला होता है।

संसार रोग निकालनेवाली वाणी

यदि मेरी वाणी उनके (सुननेवाले के) कानों में घुस गई न, तो सबकुछ साफ कर देती है तेज़ी से! जो भी रोग घुस चुका हो न, उसे तेज़ी से निकाल देती है। और इसे रटते नहीं रहना है, इसे सिर्फ सुनना ही है, बस। वह जुलाब करवा देती है। हमारी वाणी सांसारिक पराक्रमों का जुलाब करवानेवाली है।

प्रश्नकर्ता : सांसारिक पराक्रमों का जुलाब करवानेवाली है, इसका क्या अर्थ है?

दादाश्री : हाँ, सबकुछ निकल जाता है तेज़ी से! (और उसे) फिर अच्छी भी लगती है हमारी वाणी। थोड़ा कड़क बोलें न तब भी अच्छी लगती है। ऐसा है न कि यदि कड़क नहीं बोलें न तो, इन लोगों ने तो इतने जुलाब पिये हैं कि हमारा जुलाब काम ही नहीं करेगा।

प्रश्नकर्ता : हेबिचुएट (आदत पड़ जाना) हो जाते हैं। आदत पड़ गई है, जुलाब का असर ही नहीं होता।

दादाश्री : हाँ, शरीर को आदत पड़ गई है। इसलिए हमें बीच में एक डली रखनी पड़ती है। 'सीधा हो जा न' ऐसा कहना पड़ता है। भगवान महावीर ऐसा नहीं कह सकते थे। क्योंकि उनको उसी जन्म में मोक्ष में जाना था और बोलने से तीर्थंकर नाम चला जाता है। हमारा भी चला जाएगा, हमारा है ही कहाँ तीर्थंकर नाम गोत्र? और हमें इसी जन्म में मोक्ष नहीं जाना है। हम तो खटपटिये वीतराग हैं। ऐसी खटपट करते हैं कि 'सीधा रह न,' इसी जन्म में राह पर आ जाए....ऐसी खटपट करते हैं हम।

हम किसी को डाँटते हैं तो वह विरेचन है। लेकिन उससे सामनेवाला का रोग निकल जाता है। ऐसे डाँटने से हमारी बहुत शक्ति खर्च हो जाती है, लेकिन मैं इलाज किए बिना तो रहता नहीं। बल्कि मुझ पर वह जोखिम आता है। मेरे पास आकर भी यदि वह रोगी रहे, तो रोग निकालने का प्रयत्न करता हूँ। फिर यदि वह कहे कि मेरा तो दम निकाल देते हैं। तब फिर मैं समझ जाता हूँ कि भाई, उसका पुण्य ज़ोर नहीं कर रहा।

कड़क लेकिन करूणाभरी वाणी

एक व्यक्ति जो बहुत बड़े साइन्टिस्ट हैं, उनसे मैंने कहा 'मूरख हैं, मूरख।' तब फिर वे कहने लगे 'मुझे मूरख कहा?' हाँ, दो बार 'मूरख' कहता हूँ अब। उन्होंने सोचा कि दादा तो ऐसा कभी नहीं बोलते। फिर छ: महिनों बाद उन्होंने मुझसे कहा कि 'आपके मुझे मूरख कहने के बाद से मेरी मूर्खता निकल गई दादा!' क्योंकि हमारा शब्द हमारी मालिकीवाला नहीं है। इसलिए (ऐसा शब्द) निकले तो सामनेवाले का काम *निकाल* देता है।

हमारी कारुण्य बुद्धि से कभी बहुत कड़क शब्द निकल जाते हैं और काल भी ऐसा है। फ्रिज़ में रखी हुई ठंडी सब्ज़ी हो तो क्या होता है? फिर सोडा वगैरह डालें, तब सब्ज़ी गलती है, अत: हमें सोडा वगैरह डालना पड़ता है! हमें क्या ऐसा करना अच्छा लगता होगा?

पुण्यशाली के कल्याण हेतु निकले वाणी

हम यह सब इतना कड़क बोलते हैं लेकिन कड़क शब्द बोलना हमें शोभा नहीं देता। हमें इसका बहुत बोझा लगता है। लेकिन उसकी नाभि में रोग घुसा है, और वह रोग भी फिर जम चुका है, उसे निकालने के लिए हमें सख्त-कड़क भाषा बोलनी पड़ती है। कड़क बोलते हैं लेकिन दोनों व्यू पोइन्ट(दृष्टि बिंदु) से बोलते हैं। हालाँकि हमें ऐसा नहीं बोलना चाहिए। इससे हमारा सिर भी भारी हो जाता है। आप में रोग नहीं घुस जाए इसीलिए हमें बोलना पड़ता है। और फिर वह बाहरवाले लोगों से

नहीं कहते लेकिन आपकी जागृति के लिए और आपका मोह तोड़ने के लिए ही बोलते हैं।

हमें कुछ लेना-देना नहीं है, वीतराग भाव से बोलते हैं। वैसे तो कड़क वाणी निकलती नहीं हैलेकिन यदि निकल गई तो सामनेवाला का कल्याण ही हो गया, क्योंकि मैं तो बोलता ही नहीं हूँ न! यह सारा तो टेपरिकॉर्डर बोल रहा है, जब ऐसी टेपरिकॉर्डवाली वाणी निकले, तब से मैं समझ जाता हूँ कि इसका कल्याण हो गया। कोई बहुत पुण्यशाली हो, ज़बरदस्त पुण्यशाली हो तभी उसके हिस्से में ऐसा सब आता है। ऐसे पुण्यशाली कितने होंगे?

प्रश्नकर्ता : दादा, यह तो पहली बार ऐसा सुनने को मिला कि पुण्यशाली हों उसी को ही।

दादाश्री : हाँ, हमारे अंदर डाँटने के परमाणु नहीं होते। हार्ड (कड़क) शब्द हमें बोलने नहीं आते। और डाँटने के लिए तो हार्ड की ज़रूरत है। अब हमारी क्या दशा होती होगी? पूरे दिमाग़ की कढ़ी बन जाए तब जाकर सामनेवाले को शब्दों से डाँटा जा सकता है। हमारा दिमाग़ खराब नहीं है कि ऐसी वाणी निकले। ऐसी वाणी निकली इसलिए हमें अंदर ज़बरदस्त प्रतिक्रमण करना पड़ता है। क्योंकि ऐसी वाणी बोलनी नहीं चाहिए, फिर भी अगर बोलें तो सामनेवाले का पुण्य हो तभी हम बोल पाते हैं।

कड़क बोली निकाले मिथ्यात्व रोग

हमारी कड़क वाणी रूपी कैंची का स्पर्श होतो उसका सारा मिथ्यात्व काट देते हैं, खत्म कर देते हैं। हो सके तब तक हमारी कैंची का स्पर्श होता ही नहीं, ऐसा पुण्यशाली तो शायद ही कोई होता है। इस टेपरिकॉर्ड में से भारी (कड़क) शब्द निकलते ही नहीं। अगर निकलें तो सामनेवाले का काम बन जाता है। यह तो ऐसा है कि किसी ने कचरा साफ नहीं किया, इसलिए मेरे हिस्से में कचरा साफ करना आया है। वह भी झाड़-झाड़कर।

प्रश्नकर्ता :दादा, वे भाई कह रहे थे कि दादा की आँखों से उनकी आँखें मिलं न, तो पूरा यह (बदलाव) हो जाता है।

दादाश्री : बदलाव हो जाता है। और ये भाई कहते हैं कि 'हम सभी में वे सेठ बहुत सख्त थे और बहुत बुद्धिशाली थे। अभी तक किसी को सुनते ही नहीं थे। अभी तक हम झुकते ही रहे हैं। आपने झाड़कर सब (कचरा) उड़ा दिया न! इसलिए एकदम हल्के हो गए।

प्रश्नकर्ता : और दादा, आपकी वाणी बिल्कुल अहिंसक है न, इसलिए उसका अन्य कोई उल्टा असर नहीं हुआ।

दादाश्री : लेकिन ऐसा नहीं होता। होता ही नहीं है न! वीतराग वाणी, वाणी अहिंसक हो रही है। तूने देखा? ये भी दुनिया और ही है न!

ज्ञानीपुरुष की सातत्य सभर वाणी

प्रश्नकर्ता : दादाजी, जो आपने जिस शक्ति के बारे में बताया है, 'व्यवस्थित' कि 'यह सब करनेवाला कोई बाप भी नहीं है' इस प्रकार जिस वाक्य का प्रयोग किया, शब्द प्रयोग किया, वह किस तरह किया?

दादाश्री : देखकर किया। गप नहीं है, वर्ना मैं जोखिमदार कहलाऊँगा। एक भी वाक्य यदि मैं उल्टा बोलूँ तो बहुत बड़ा जोखिम। एक शब्द भी उल्टा बोलूँ तो मैं जोखिमदार कहलाऊँगा।

एक भी वाक्य गैर ज़िम्मेदारीपूर्वक नहीं बोल सकते। हमारा तो एक-एक वाक्य इसमें (टेपरिकॉर्डर में) टेप हो चुका है, अभी बोले हुए शब्द इसमें टेप हो रहे हैं। और शब्द टाइप होकर, उनमें से छपकर पुस्तकें बनेंगी। इसलिए बहुत बड़ी जोखिमदारी मेरे सिर आएगी।

इसलिए यहाँ पर गप नहीं चल सकती, एक

सेकन्ड के लिए भी गप नहीं चल सकती। यहाँ रियलाइज़ (स्पष्ट) किया हुआ शब्द, एक-एक शब्द रियलाइज़ किया हुआ होना चाहिए और मैं हर एक शब्द का खुलासा देने के लिए तैयार हूँ।

हर एक शब्द जो मैंने कहा है, आज से बीस साल पहले कहा हुआ हूँ, और उन शब्दों से ये सभीपुस्तकें बनी हैं। उनमें से बीस साल पहले का कोई भी शब्द यहाँ लेकर आओ और आप कहो कि 'इसका एक्स्प्लनेशन (स्पष्टिकरण) कीजिए,' तो हमें वह एक्स्प्लनेशन देना पड़ेगा। हर एक शब्द का एक्स्प्लनेशन देने के लिए तैयार हूँ। हमारी वाणी अमर ज्योत है।

प्रश्नकर्ता : इस बैठक पर से गप तो नहीं लगाई जा सकती न!

दादाश्री : वस्तु (वस्तुस्थिति) में यहाँ हम से अन्य कुछ नहीं कहा जा सकता। हम एक शब्द भी उल्टा (गलत) नहीं बोल सकते। क्योंकि हम रिस्पोन्सिबल हेड (ज़िम्मेदार *ऊपरी*) कहलाते हैं।

हम मौन पकड़कर नहीं बैठ सकते। सही हो तो सही कह देना चाहिए, अगर गलत हो उसे गलत कह देना चाहिए। 'नहीं है' उसे 'नहीं' कहते हैं और 'है' उसे 'है' कह दते हैं। अन्य कुछ बोलें न, तो ज़िम्मेदारी आती है।

आप यदि उल्टा बोलो तब भी मुझे सीधा बोलना पड़ता है। आप अविनय करो तो मुझे विनय रखना पड़ता है क्योंकि मैं रिस्पोन्सिबल हूँ। और आप यदि इररिस्पोन्सिबल (बेजवाबदार) हों तो उसे मैं समझ सकता हूँ।

प्रखर वाणी असल चरोतरी भाषा में

प्रश्नकर्ता : दादा, आपकी यह निर्भय वाणी सुनकर हमारे भय भी निकल जाता है।

दादाश्री : हाँ। डरता क्यों है यों ही बिना मतलब, यह काट लेगा या वह काट लेगा? अरे भाई! तूने खुद की भूलों को *ऊपरी* (बॉस, वरिष्ठ मालिक) बनाया है।

यह तो प्रखर विज्ञान उत्पन्न हुआ है। अरे! अनंत जन्मों से आराधन किए हुए पक्के ज्ञान को मैं एक घंटे में चकनाचूर (चूर-चूर) कर देता हूँ। आपके इस भय, घबराहट, मान सभी को तोड़कर चूर-चूर कर दिया। अब भय किस का?

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, ज्ञानीपुरुष से जब ऐसा सुनने को मिलता है, तब इस वाणी से आत्म वीर्य प्रकाशमान होता है।

दादाश्री : हाँ, हम *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) सार बिल्कुल भी व्यर्थ नहीं जाने देते, इसलिए ऐसी आवाज़ निकलती है। पूरा *पुद्गलसार* वाणी में निकलता है!

यह जो मैं कहता हूँ न कि ''अवस्था मात्र कुदरती रचना है। जिसे रचनेवाला कोई बाप भी नहीं है।'' इस 'बाप' शब्द के बारे में तो पाँच सौ साल बाद भी सभाएँ होंगी कि यह 'बाप' शब्द कहाँ से आया! बंगाल से? फिर वे ढूँढ निकालेंगे कि यह तो चरोतर (मध्य गुजरात में बहुमतीवाला प्रदेश) में बोला जाता है। इसलिए ये बोलनेवाले चरोतर गाँव के हैं।

भादरण की असल पाटीदारी भाषा में कहता हूँ। मैंने भगवान को भी बुरा-भला कहा है तो तेरी या तेरे बाप की क्या बिसात?

वाणी में सख्ती, लेकिन बगैर जुनून की

हम टोकते नहीं है। टोकने की बहुत कीमत होती है। उसकी पुण्य हो तब टोकते हैं। हम किसी को टोकें और वह उसे पकड़ लें तो वह व्यक्ति आगे बढ़ जाता है।

प्रश्नकर्ता : वह जो लेखक आए थे वह कह

रहे थे कि दादा की भाषा बहुत कड़क है, लेकिन जुनून नहीं है। भाषा में जूनुन नहीं है, सख्ती है।

दादाश्री : एक लेखक यहाँ पर आए थे और प्रेसवाले (इस्तरीवाले) कपड़े पहने हुए थे। मैंने कहा, 'यह सारे भूत कहाँ से चिपटा लिए?' तो उन्होंने कहा, 'दादाजी कैसे भूत?' अब यह तो लेखक। वे लेखक तो मेरी ही परीक्षा लें ऐसी जबकि उल्टा मैंने कहा, 'यह एटिकेट के भूत कहाँ से ले आए?' तो वह चौंक गए। कोई ऐसा प्रश्न पूछता होगा कभी? मन में उस घड़ी तय कर लें कि अब फिर से नहीं आना है। उसके बाद फिर मैं दवाई लगा देता हूँ। लेकिन वे समझ गए कि मेरे हितेषी हैं यह दादा। तब वे फिर आते हैं। इसीलिए वे कहते हैं न कि अगर किसी ने मेरा एटिकेट निकाला है तो दादा ने।

एटिकेट होता है उनमें। ट्रेन में तकलीफ न हो इसलिए यहाँ से मुंबई तक खड़ा ही रहता है। अरे घन चक्कर! बैठ न, तेरे बाप का क्या जानेवाला है? ऐसा यह बिना बात का भूत! किस तरह के लोग हैं? हमारी भाषा तो मूल चारोतरी भाषा! ये सिर्फ शब्द नहीं हैं न! चारोतरी भाषा वज़नदार होती है, शब्दों से भरी हुई भाषा।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहनेवाला कोई मिलता ही नहीं।

दादाश्री : ऐसा कौन मिलेगा? ऐसे वीतरागी परमात्मा कहाँ से मिलें!

कड़क वाणी लेकिन अमृत समान

हमारी बात (वाणी) कड़वी है लेकिन निरा अमृत भरा हुआ है। ऐसा कड़क न बोलें तो (इन्सान में से) कलियुग नहीं निकल सकता। हम तो झाड़ने के लिए ही आए हैं। इस कलियुग को तो मेरे महात्मा झाड़-झाड़कर निकाल देंगे।

हमारे हिस्से में लोगों को डाँटना (की बारी) आई है लेकिन मेरी गालियों (कड़क शब्दों) में निरा अमृत भरा हुआ है। और मैं तो गाली देकर सीधा करने के लिए आया हूँ। मारकर मोक्ष में ले जाने को आया हूँ। धर्म में गालियाँ नहीं होतीं, क्योंकि वह मनोरंजन है। (अगर गालियाँ हों) तो वे उठकर चलता बनेगा। मेरे अलौकिक धर्म में आत्मरंजन है, अत: गालियाँ दूँ (सख्ती से बोलूँ), फिर भी उठकर चला नहीं जाता।

तीर्थंकर एक भी टेढ़ा शब्द नहीं बोलते थे। लेकिन हमारी यह रिकॉर्ड बजती है कि, अरे, बेशरम, घन चक्कर, इस तरह हमारी रिकॉर्ड बजती है। तब मैंने जाँच की कि यह रिकॉर्ड ऐसी क्यों बजती है? तब समझ में आया कि लोग ऐसे ही हो गए हैं इसलिए। यह बेशरम, घन चक्कर, उल्टी खोपड़ी के वगैरह शब्द निकलते हैं, तब वह हमें भी अच्छा नहीं लगता लेकिन रिकॉर्ड को कैसे बदला जा सकता है? यह तो हमारे में परम कारुण्यता है, परम कारुण्य स्वभाव है इसलिए ऐसी रिकॉर्ड बजती है। यह हमारी *लागणी* (भावुकतावाला प्रेम) नहीं है लेकिन पूर्व जन्म का प्रवर्तन है कि यह जगत् ऐसा हो गया है!

स्पीच ऑफ टेपरिकॉर्ड

मैं डाँटने के लिए नहीं आया हूँ। यह तो साधारण बात कर रहा हूँ। एक व्यक्ति को संबोधित करके बात नहीं कर रहा हूँ, साधारण बात कर रहा हूँ। और हमारे इन शब्दों में हिंसा नहीं है। हमारे शब्द किसी का अनुसरण करके नहीं होते और वे काम *निकाल* लेते हैं। आखिर में तो यह ज्ञानीपुरुष की वाणी है हमारी वाणी नहीं है। दिस इज़ द स्पीच ऑफ ओरिजिनल टेपरिकॉर्डर (यह टेपरिकॉर्डर की वाणी है)।

ये शब्द मेरी मालिकी के नहीं हैं, इसलिए रोग निकल जाएँगे। जो रोग होगा तो वह निकल जाएगा जिसे निकालना हो उसका। जिसे (रोग) नहीं

निकालना हो उसे हमें कुछ कहना भी नहीं है। फिर उन्हें निकालना या न निकालना वह तो उसकी इच्छा पर है। खुद की दुकान खाली करनी है या नहीं करनी यह तो खुद की मरजी की बात है न?

राग-द्वेष रहित वाणी

राग-द्वेष रहित कड़क वाणी, इसी को ज्ञान कहते हैं। शांत स्वभाव की वाणी निकले तब स्याद्वाद होती है और कड़क निकलें तब कारुण्यता होती है। आज सुबह जो कारुण्यता निकली थी न वहाँ पर? एक थोड़ सा ही दोष निकालने के लिए। पूरी ज़िंदगी जो नहीं निकल सका, उसे निकालने के लिए भारी बरसात बरसी। राग-द्वेष रहित वाणी है यह!

लेकिन ऐसे करते-करते दोष निकल जाते हैं। हमारे जो शब्दों हैं न वचनबल काम करता है अंदर। उनकी फाइल को देर लगेगी ज़रा लेकिन काम किए बिना रहते नहीं है, अंत में तो हिसाब साफ कर देते हैं। ज्ञानीपुरुष का शब्द कभी भी फल दिए बगैर रहता ही नहीं। चाहे किसी भी अवतार में भी फल देगा ही। ज्ञानीपुरुष का बोल अगर इस जन्म में (न फले) तो दूसरे जन्म में फले बगैर रहेगा ही नहीं।

यह जो कड़क वाणी निकलती है, वह कारुण्यता ह! क्योंकि हमें कुछ नहीं चाहिए, तो फिर क्यों ऐसे वचनबल का उपयोग हो रहा है? इस दुनिया में जिसे कोई भी चीज़ नहीं चाहिए, किसी भी चीज़ की जिन्हें ज़रूरत नहीं है, जिन्हें किसी भी तरह की इच्छा ही नहीं है, जिन्हें निरिच्छक दशा बरतती हैं, जिन्हें ऐसा भी कल्पना में नहीं है कि 'इस देह में एक भी परमाणु मेरा है,' उसे फिर क्या करना है? और उनकी दशा तो बहुत काम *निकाल* लेती है लोगों का। हमारे तो परिग्रह ही नहीं होता, अपरिग्रही ही हैं। हम तो निरंतर महाव्रतधारी। अपरिग्रही, जिन्हें देह का भी परिग्रह नहीं है, वाणी का भी परिग्रह नहीं है 'यह वाणी मेरी है' ऐसा भी नहीं है।

जिन्हें राग-द्वेष नहीं है, जो वाणी के, टेपरिकॉर्डर के मालिक नहीं बनते। मालिक बने होते तो जब अच्छी वाणी निकलें तब हम कहते कि कितनी अच्छी बात कही हमने, ऐसा सब बोलते न? हमें खराब से लेना-देना नहीं है। अत: यह तो आश्चर्य ही है न!

निर्लेप-निर्वासनिक वाणी

''ज्ञानीपुरुष तो खुद ही सभी रूपों से हैं। वे पहचानने आने चाहिए।'' उनकी वाणी निर्लेप, किसी भी वासना से रहित वाणी सुनने में आए तभी से वह निर्लेप और निर्वासनिक बन जाता है, फिर वह मुस्लिम हो या चाहे कोई भी हो। ज्ञानीपुरुष की वाणी निर्लेप-निर्वासनिक होती हैं।

सिर्फ ज्ञानीपुरुष ही निर्वासनिक होते हैं और उनकी वाणी वासित नहीं होती, वासनावाली नहीं होती। वह वाणी तुरंत फल देती है। हमारा वचनबल अंदर गया तो काम किए बगैर रहता ही नहीं। अत: यहाँ पर कैसा बोध होता है? निर्वासनिक बोध होता है, शुद्ध बोध होता है और बाहर सभी जगह पर तो वासनावाला बोध होता है और उनमें भी वासना होती है। कपड़ा फट जाए तो मन में ऐसा होता है कि सेठ लाकर देंगे, चश्मे चाहिए तो यह सेठ लाकर देंगे। इसलिए फिर 'आइए सेठ, आइए सेठ' करते हैं। वे खुद ही पूरे दिन *अजंपा* (बैचेनी) करते रहते हैं। उनका खुद का ही कल्याण नहीं हुआ, तो फिर अपना तो कब निबेड़ा आएगा?

प्रकृति से बाहर निकल गए हों उनकी वाणी कुछ अलग ही तरह की होती है! और उसकी निर्भिकता ही बताती है कि स्वतंत्र हो चुका है। हाँ, वे दुनिया के स्वामी की तरह घूमता है।

वीतरागता निकाल दें आवरण

प्रश्नकर्ता : यहाँ पर कितने ही लोग प्रश्न

पूछते हैं, तब आपकी तरफ से जवाब आते हैं तब पूछनेवाले को ऐसा लगता है कि यह मुझे नीचा दिखाना चाहते हैं और आपको तो ऐसा कुछ नहीं रहता।

दादाश्री : हाँ, लेकिन वह तो ऐसा लगता ही है न बेचारे को, प्रश्न पूछनेवाले का तो अहम् होता है इसलिए। लेकिन उसे नीचे लाए बिना वह समझेगा कैसे? वह आवरण टूटे बिना वह किस तरह समझेगा? इसलिए पहले हम उसे नीचे ले आते हैं, और ज़रा झाड़ देते हैं। उसे नीचे नहीं लाए तो प्राप्ति किस तरह करेंगे आप? ज़रूरत से ज़्यादा अक्लमंदी नहीं छूटें तो आप प्राप्ति नहीं कर पाओगे इसलिए (अगर बहुत ऊपर चढ़ गया हो तो) नीचे तो लाना ही पड़ता है। उतारना पड़ता है, चढ़ाना पड़ता है, उतारना पड़ता है, चढ़ाना पड़ता है। फिर भी किसी के साथ मतभेद नहीं हैं हमें। और यदि चढ़ाएँ-उतारें नहीं तो ऊपर की मंज़िल पर कैसे पहुँचोगे (प्रगति कैसे करोगे) आप? प्रगति करनी है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : करनी है।

दादाश्री : और तब भी अगर आप कहो कि सीढ़ियाँ नहीं चाहिए तो?

(आप कहते हों) 'कड़क वाणी क्यों? हमें सुधारना हो तो क्या आपके पास कोई और तरीका नहीं है वाणी का? क्या आपके पास वाणी का स्टॉक कम है?' अन्य अनेक तरह की वाणियाँ हैं। मुझे अच्छी मीठी बातें करना भी आता है। बहुत अच्छी मीठी अंगूर जैसी बातें करना भी आता है लेकिन अगर कॉट को झाड़ेंगे नहीं तो धूल भी साथ में आ जाएगी। झाड़ना तो पड़ता है न, ज़रा? अब अगर किसी भी चीज़ को झाड़ना हो तो ऐसे-ऐसे करने को झाड़ना नहीं कहते। ऐसे-ऐसे हाथ लगाएँ तो उसे कहीं धूल नहीं निकलती, झाड़ना पड़ता है। इसलिए हम झाडते हैं। कड़क वाणी नहीं बोलते, झाड़ते हैं। अगर धूल नहीं उड़े, तो वीतराग भाव से झाड़ते हैं।

कोमल भाव से समझ में आती है हित की बात

हमारी वाणी ऐसी होती है कि किसी को भी दु:ख स्पर्श न करे, फिर भी अंदर 'नंगोड़' शब्द भी होता है। क्योंकि अगर कपड़ा बहुत मैला हो गया हो तो धोबनेसे मार-मारकर साफ करना पड़ता है। हमारी वजह से किसी भी देव को गलत न लगे इसलिए हमने पहले से ही कह रखा है कि 'हमारे शब्द बहुत ही कड़क है, लेकिन हमारा भाव बहुत ही कोमल है।'

हमारी बात मलहम लगानेवाली बात नहीं होती। मलहम लगानेवाली बात लंबे समय तक टिकती नहीं है। हमारी बात ज्ञानवाली होती है इसलिए हम साफ-साफ कह देते हैं सभी को। व्यवहार में जो नहीं बोली जा सकती, हम ऐसी बात करते हैं क्योंकि जब हम कहें तो हमें उसका दोष नहीं लगता। कोई हम पर दोष नहीं लगाता, सभी सीधा समझ जाते हैं। अपने जो महात्मा हैं न, वे सबकुछ सीधा समझ जाते हैं क्योंकि मिथ्यात्व चला गया है न इसलिए वक्रता चली गई। अत: सबकुछ सीधा समझ जाते हैं कि अपने हित की बात कर रहे हैं।

सब धर्मों के सार रूपी बात मिलती है यहाँ

चौबीस तीर्थंकरों ने जो सब बातें कही हैं, वे सब बातें यहाँ पर मिलती हैं, हर एक बात और चार वेदों की बातें संपूर्ण मिलती हैं। मुस्लिम का स्टेन्डर्ड भी मिलता है। यह तो अलोकिक चीज़ है लेकिन लोगों को समझ में नहीं आए, तो क्या करें? यह तो इस काल का आश्चर्य है लेकिन प्रजा डाउन हो गई हैं इसलिए समझ नहीं सकती न! अत: हमें इन सभी को बड़ा करना पड़ता है कि 'बच्चे, तू सीख, यह

सीख।' ऐसे मुझे तो पहाड़ की ऊपर की बात नीचे उतरकर करनी पड़ती है, तब जाकर लोगों को समझ में आता है।

अटा-पटाकर भी रास्ते पर लाते हैं

आज-कल के लोगों के मन कैसे हो गए हैं? फ्रेक्चर हो गए हैं। सहन नहीं कर सकते। बोझा सहन ही नहीं कर सकते। सारा माल ही फ्रेक्चर हो गया है। यह माल स्ट्रोंग नहीं है। वह तो जैसै-तैसे अटा-पटाकर काम करना है।

इन्हें तो पटा-पटाकर बिठाता हूँ और पटा-पटाकर बुलाता हूँ। आइए पधारिए! बैठिए न, फलाँना ऐसा-वैसा करके, अटा-पटाकर धर्म करवाता हूँ।

कैसी ज्ञान कला ज्ञानी की!

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, अगर आपने कुछ कड़क कहा हो तो, उससे सामनेवाले को बहुत लाभ हो जाता है।

दादाश्री : लाभ के लिए ही कड़क है फिर भी उस कड़काई को कम करते हैं। कड़क बोलकर और लाभ करवाकर फिर दवाई चुपड़नी पड़ती है! और अन्य कहीं पर तो जो लोग होते हैं, वे पोलिश करते हैं। ऐसे पोलिश करते हैं, माइल्ड पोइज़न (धीमा ज़हर) पिलाते ही रहते हैं न! आपको दो तरह का नशा (कोमल और मीठा) दे देते हैं। उससेनशा चढ़ता रहता है, और गाड़ी चलती है।

हमें कड़क भाषा आती है, कोमल भाषा भी आती है, सबकुछ आता है। सीखना पड़ा, नहीं तो चले जाएँगे। जैसे तैसे करके रास्ते पर ला ही देते हैं। एक बार रास्ते पर आने के बाद तो वापस नहीं जाते, नहीं क्या? कोमलता से बोले बगैर तो आएँगे ही नहीं न? आपको क्या लगता है? कोमलता से बोलें तो अच्छा रहता है न? वह अच्छा रहता था न? और फिर आते हैं। नहीं तो, 'यहाँ पर नहीं भाई, बहुत मुश्किल काम है।' ऐसा कहते।

हमारे मुँह से निमित्त के बिना कड़क वाणी निकलती नहीं है कभी। तो कभी निमित्त आता भी है। अगर आपका मन मज़बूत रहेगा तो निमित्त मिल जाएगा कभी। उसकी कल्पना नहीं करनी चाहिए कि किस तरह होगा? ऐसा सब सोचने जैसा नहीं है। यह जगत् तो एक घड़ी में क्या से क्या कर दें? क्या से क्या बदलाव कर दें।

अरहत वाणी

प्रश्नकर्ता : आपने कहा था अरहती, तो वह समझ में नहीं आया, तो ज़रा समझाकर बताईए न!

दादाश्री : अरहत, 'वन हू डिज़र्व्स।' अर्थात् हमारी वाणी योग्यता के अनुसार निकलती है। नहीं तो अगर योग्यता से बाहर निकलें तो मुश्किल खड़ी हो जाए, लेकिन होती नहीं है। शायद ही कभी ऐसा होता है और वह भी दो-पाँच साल में ऐकाध बार होता है। ऐसा होता नहीं है न! ऐसे अयोग्य लोग अपने यहाँ आते भी नहीं हैं। यह वाणी तो फिट हो जाती है। यह कैसी फिट हो गई है! सभी को ठीक लगा न?

वाणी निकलती है समयानुसार

प्रश्नकर्ता : दादा, यह भाई ऐसा कह रहे हैं कि हमारे समय में दादा जितना सख्ती से बोलते थे, अभी की वाणी उसकी दस-प्रतिशत भी नहीं है।

दादाश्री : हाँ, ठीक है। उन दिनों हाँकता था सभी को, पूरे जगत् को, तब मुझे मेरी भूल समझ में आती गई वैसे-वैसे हाँकना बंद कर दिया। आप भले ही कितने भी बड़े भगवान बन गए हों या भगवान के प्रतिनिधि बने हों, या भगवान आपके वश में हो गए हों, आपको हाँकने का क्या अधिकार है? तो वह जो हाँकता था, वैसे हाँकना बंद हो गया, तब

समझदार हुआ न! अत: पहले जो बोलता था तब की और अब की वाणी में बहुत फर्क है।

प्रश्नकर्ता : उसका क्या कारण है?

दादाश्री : अंदर जो जोश है उसे प्रकट करता है वह। अत: वह जोश कम हो जाता है। नया उत्पन्न नहीं होता। अंदर कम हो जाता है लेकिन इसका लाभ उठा लेना है। अपने आप ही यदि जोश आए उसे कुदरती कहते हैं।

प्रश्नों के प्रति स्पंदन के रूप में निकले वाणी

प्रश्नकर्ता : वे तो ऐसा बताते हैं कि पहले दादा आकर तुरंत ही ऐसे बोलना शुरू कर देते थे, प्रश्नों के बिना ही!

दादाश्री : नहीं, वह तो आप सभी के मन में जो प्रश्न होते हैं, तो उसका हमारे मन में प्रति स्पंदन पड़ता है कि तुरंत ही बात निकल जाती है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् अभी किसी के मन में प्रश्न ही नहीं हैं, ऐसा है न?

दादाश्री : लेकिन अंदर ऐसा प्रति स्पंदन पड़ें तभी न! अत: सब के जो प्रश्न होते हैं वैसा ही प्रति स्पंदन अंदर पड़ता है। इसलिए फिर सभी कहते हैं कि अभी मुझे जो पूछना था, वही निकला। वह निकलता भी है, अब तो किसी के अंदर प्रश्न ही नहीं हैं!

प्रश्नकर्ता : अगर दो जने हों फिर भी दादा सुबह सात बजे से बारह बजे तक बोलते रहते थे और दोपहर को दो से रात के नौ बजे तक बोलते थे।

दादाश्री : वह तो उसके अंदर प्रश्न होने चाहिए न? यदि उसके प्रश्न हो न तो उनका प्रति स्पंदन पड़ता है। प्रति स्पंदन पड़ता है इसीलिए यों ही मेरी वाणी निकल जाती है, वह जो पूछना चाहता है वही, लेकिन अगर प्रश्न ही नहीं हो तो फिर बात ही कहाँ रही?

प्रश्नकर्ता : लेकिन फिर भी आप तो सभी की उलझनें जानते हैं न। इस ज्ञान में आगे बढ़ने के लिए जो सभी को सहायक हो, उस विषय पर यों ही थोड़ी बहुत बात शुरू की जा सकती है न।

दादाश्री : हाँ, उसी के लिए तो बैठे रहना है न। रोज़ जो आते हैं, वह इसी के लिए ही न! फिर जोड़ने योग्य हो तो उसे(वह) जोड़े और न भी जोड़े सिर्फ बैठे रहें तो उनका हम क्या करें फिर? उससे क्या भला होगा? उपयोग चूके उसका कोई उपाय नहीं है न! यह तो उपयोगवाले का काम है। यहाँ पर तो अगर उपयोग नहीं रहें, तो उसे कोई नुकसान तो नहीं होनेवाला। यह तो फायदा ही है लेकिन अगर उपयोग हो तो उसकी तो बात ही अलग है! इस जन्म में स्वतंत्र हो जाएगा न! कोई दख़लंदाज़ी ही नहीं रहती न किसी को।

परम ज्ञानी तो अनंत शक्तियों के प्रेरक होते हैं। आप तार जोड़ो तो हम आप में हमारी शक्ति की प्रेरणा डालते हैं। हम आपको भावश्रुत देते हैं उससे आप में आत्म विचारणा से द्रव्यश्रुत स्फूर्त होता है और आप भी समस्त स्फूर्त प्राप्त करें। हमारी वाणी का अंत आए ऐसा नहीं है लेकिन जितना सामनेवाले के मन का परिणाम होता है (प्रमेय के अनुसार परिणाम), हम उतना ही बोलते हैं। और बाकी का काम हमारी सिद्धियों से करते हैं। सामनेवाले के मन की सीमा के अनुसार ही हमारी वाणी निकलती है।

उपयोगमय मुलायम वाणी

प्रश्नकर्ता : दादा, हमें जो मज़ा आता है वह तो देहधारी परमात्मा की वजह से हैं, उनकी बातें सुनने को मिलती हैं इसलिए मज़ा आता है, लेकिन आपको किस चीज़ का मज़ा आता है?

दादाश्री : लो, कैसी बात है यह! मुझे भी मज़ा आता है क्योंकि टेपरिकॉर्डर की बात है। मेरे खुद की बात होती तो मुझे मज़ा नहीं आता। यह टेपरिकॉर्डर की बातें हैं न, इसलिए जितना मज़ा आपको आता है उतना ही मज़ा मुझे भी आता है। मैं अलग, ये बातें अलग। अंदर रेडियो बोल रहा हो, वैसे यह रेडियो की तरह बोलते हैं। आपको मज़ा आता है उतना ही मुझे भी। और एक्ज़ेक्ट ऐसा ही है।

हमारी वाणी तो संपूर्ण उपयोगमय है, एक-एक समय पर उपयोगवाली वाणी रहती है और वह भी फिर इतनी मुलायम होती है कि ऐसी तो वर्ल्ड में किसी की भी वाणी नहीं है।

मीठी-मधुरी वाणी

प्रश्नकर्ता : जब आप बोलते हैं तब हमें(उसे सुनकर) मादकता क्यों आती है?

दादाश्री : ऐसा है न कि एक तो यह वाणी मनोहर है! मन का हरण करें ऐसी है। मादकता इसलिए आती है कि उसे सुनने का मन होता रहता है, ऐसी मिठास है। और अगर बहुत मिठास पीए तो फिर किसी को मादकता हो जाती है, नशा चढ़ता रहता है। बाकी (इस वाणी में) मिठास बहुत है। और जिसने यह मिठास देखी है, वह उस पर से हिसाब निकाल लेता है कि तो फिर तीर्थंकरों की वाणी में कितनी मिठास होती होगी! इस दुनिया में ऐसी कोई चीज़ नहीं है कि जो तीर्थंकर की वाणी के समान मीठी हो। ज्ञानी की वाणी भी मधुर होती है, लेकिन तीर्थंकरों की वाणी की तो बात ही अलग!

निखालस-मुक्त हास्य से भरी

प्रश्नकर्ता : आपकी यह निखालस वाणी और आपका जो यह निखालस हास्य है, उसका क्या रहस्य है? यह समझाइए।

दादाश्री : पूरे चौदह लोक के नाथ, जिन्हें पूरा जगत् मानता हैं, ऐसे वे भगवान मेरे वश हो चुके हैं।

प्रश्नकर्ता : जय सच्चिदानंद।

दादाश्री : सिर्फ ज्ञानीपुरुष का हास्य ही मुक्त होता है, मुक्त वाणी होती है। अन्य किसी का मुक्त हास्य, मुक्त वाणी नहीं होती। खिंची हुई वाणी होती है।

जगत् विस्मृत करवानेवाली वाणी

'जगत् विस्मृत हो जाए,' इस तरह से तमाम शास्त्र एक ही बात करते हैं। ज्ञानीपुरुष हाज़िर हों तो काम हो जाए। जैसे लक्ष्मी के दाता लक्ष्मी दे सकते हैं उसी तरह अगर मोक्ष दाता हों तभी ही मोक्ष का दान दे सकते हैं। यहाँ पर तो जब यह वाणी सुनते हैं, तभी अंदर आत्मा प्रकट होता जाता है और जगत् विस्मृत रहता है। जो जगत् की विस्मृति करवा दे वही ज्ञानी का वाक्य है। जितने समय 'दादा', 'दादा' करते हैं उतने समय तो जगत् विस्मृत हो जाता है। जगत् के लोगों को तो एक क्षण के लिए भी विस्मृत नहीं होता।

ज्ञानीपुरुष की वाणी और ज्ञानी का सानिध्य,मात्र ही जगत् विस्मृति का साधन हैं। ज्ञानीपुरुष के दर्शन के क्षण, उनकी उपस्थिति के क्षण, उनकी श्रुतवाणी सुनने के क्षण, वे ही अति कीमती हैं। बाकी के भले ही घंटों बीत जाएँ या बीत चुके हैं। वह व्यर्थ है, व्यर्थ ही गए।

अहो! अहो! आफरीन करवानेवाली

दादाश्री : ये भाई कहते हैं कि 'दादा आपकी वाणी सुनकर आफरीन हो जाते हैं।' मैंने कहा, तो तू बता, 'इन दादा पर तेरा आफरीन भाव क्यों है?' तू क्या कहना चाहता है? बोल न।

प्रश्नकर्ता : वह तो जब आप कहते हैं न कि 'हम कर्मों को जलाकर भस्मीभूत कर देते हैं।'

लेकिन वास्तव में आप उस तरह से कहते नहीं है। 'हम ज्ञान दें तब वह ज्ञान, अंदर वे ज्ञानाग्नि ही आपके पापों को जलाकर भस्मीभूत कर देगी।' अत: व्यवहार में भी आपका कर्ता पद कहीं भी नहीं बरतता है, वह वाणी भी ऐसी कर्ता पद रहित होती है।

दादाश्री : मतलब अगर तू इन सब का निरीक्षण करे न लिखते समय, तब उन्हें भी यह वाक्य सुनकर आनंद हो जाए। मैं तो यहाँ पर हूँ लेकिन वाक्यों के प्रति अहो! अहो! अहो भाव। उस अहो भाव से न जाने कितना सब निकल जाता है! भूत निकल जाते हैं न सभी! किसी को अहो भाव हुआ नहीं है। ज्ञानी के वाक्यों के प्रति यदि अहो भाव होने लगे, तो परमात्मा बन जाए!

ज्ञानी के वाक्यों पर अहो भाव करो। वे वाक्य ओहोहोहो! कितने सारे, कितने अर्थों से ऐसा बना है और सिर्फ इसके कितनी तरह के (भावार्थ) हो सकते हैं! वाक्य कोई ऐसा-वैसा हैं, कहते हैं! ऐसे वाक्य एकाध-दो-चार तो बोल।

वचनबल सहित वाणी

प्रश्नकर्ता : दादा की बात ऐसी है कि एक सादा वाक्य होता हैं न, तो एक ही वाक्य ऐसा होता है कि हर एक लेवल का व्यक्ति हर एक तरह से ले सकता है और वह हर एक को उसकी तरह से पहुँच जाता है।

दादाश्री : उसे निवारण मिल जाता है।

प्रश्नकर्ता : अत्यंत गहराईवाले को भी मिलता है और कम गहराईवाले को भी मिलता है।

दादाश्री : जो ज़्यादा पचाए तो उसे पूरा-पूरा लाभ मिलता है। कम पचाए तो कम मिलता है। लेकिन उसके लिए पुष्टिकारक होता है। दवाई को ज़्यादा पचा दे तो उसे पूरा-पूरा मिल जाता है।

प्रश्नकर्ता : ये शब्द ऐसे होते हैं कि सभी एकदम से अंदर उतर जाते हैं।

दादाश्री : हमारी वाणी बचनबलवाली होती है। वचन अंदर जाए तो वह आज नहीं उगे तो पाँच साल के बाद में भी अंदर उगे बगैर रहेगा नहीं। मरती नहीं यह वाणी। वचनबलवाली अर्थात् श्रीमद् राजचंद्र जी ने कहा है कि 'ज्ञानीपुरुष का वह कैसा वचनबल!' वचनबल है इसीलिए हम ज्ञान देते हैं, तब लिख लेने के लिए नहीं कहते हैं न! देखो न, हथेली में लिखा जा सकें उतने संक्षेप्त में यह आत्म ज्ञान दे देते हैं न! और बाकी सब जगह तो अज्ञानी को पुस्तकें लिखने पड़ती हैं। जो नकल करके लिखते हैं वे तो सब अज्ञान का हैं। हमारा तो यह वचनबल काम करता ही रहता है।

प्रश्नकर्ता : अपना ज्ञान बुद्धिवालों के बजाय सूझवाले को अधिक जल्दी समझ में आ जाता है।

दादाश्री : सूझवाले को जल्दी समझ में आ जाता है। सूझवाले को तो पूछने भी नहीं जाना पड़ता न! बुद्धिवाले को भी समझ में आता है, लेकिन बुद्धिवाले को समझने में देर लगती है और सूझवाले को तो तुरंत ही समझ में आ जाता है।

आवरण टूटने से खिले दर्शन

प्रश्नकर्ता : आप यह जो बात करते हैं और हम सुनते हैं, वे हमारे आवरण को डायरेक्टली तोड़ देती हैं? क्या ज्ञानावरण कर्म को खत्म कर देती हैं?

दादाश्री : आवरण तोड़ देती है। जितना सुनोगे उतने आवरण टूटेंगे ही न!

प्रश्नकर्ता : अत: आपकी सारी वाणी असर न करें, ऐसा भी हो सकता है?

दादाश्री : मतलब? असर नहीं करे इसका क्या मतलब है?

प्रश्नकर्ता : उदाहरण के तौर पर आप अभी एक बात कर रहे हैं ये सभी अलग-अलग लोग यहाँ पर बैठे हैं, अब सभी को असर अलग-अलग ही होता है। इसका अर्थ यह हुआ कि अलग-अलग तरह से समझ में आता है, अलग-अलग प्रकाश मिलता है अथवा फिर समझ में अलग तरह से उतरता है। वह क्या है?

दादाश्री : छलनी अलग-अलग तरह की हैं न सारी।

प्रश्नकर्ता : किस जगह पर आपकी वाणी का विस्फोट होता होगा? अंदर क्या प्रकिया होती होगी?

दादाश्री : आत्म प्रदेश पर जहाँ-जहाँ आवरण हैं, जब मैं बोलता हूँ तब जो-जो आवरण टूटते हैं, वहाँ पर वह दिखाई देता है। तब आपको पक्का विश्वास हो जाता है। आपके आवरण टूटे तब आप समझ गए कि यह इस शब्द के बोलने से। भाई यह सब तो जो हैं वह इस स्पेस के आधार पर है, इन मनुष्यों के चेहरे वगैरह सभी कुछ। और अगर किसी के आवरण नहीं टूटें तो उसे पता नहीं चलता।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् इस वाणी से जो आवरण टूटें, वह असर और वाणी याद रहना, यह दो चीज़ें हुई न? वाणी मेमरी (याददास्त) में रहनी चाहिए ऐसा इम्पोर्टन्ट (महत्वपूर्ण) नहीं है न?

दादाश्री : नहीं। आवरण टूटा इसका मतलब बिलीफ में आ गया।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उस आवरण का टूटना ज़रूरी ही है न?

दादाश्री : आवरण टूटा इसलिए बिलीफ में आया, लेकिन ज्ञान में नहीं आया। फिर खुद को उस रूप का अनुभव होता है तब वह ज्ञान में आता है।

प्रश्नकर्ता : एक तो आपकी वाणी आवरण तोड़ती है और दूसरा याद रह जाती है।

दादाश्री : नहीं। जब वह आवरण तोड़ती है तब बिलीफ खड़ी होती है कि इस मान्यता में आ जाता है, प्रतीति हो जाती है कि यह सच ही है। आवरण तोड़ती है और प्रतीति होती है, दोनों एक साथ ही हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् अब आवरण तोड़कर बिलीफ में आ जाना, उसका महत्व है न? याद रहें उसका महत्व नहीं है न?

दादाश्री : उसका महत्व है ही नहीं। याद आना तो, जो भूल चुके हैं वही चीज़ याद आती है। इसका याददाश्त से लेना-देना ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : अत: आपकी यह सारी वाणी असर डालती है या फिर ऐसा हो सकता है कि कोई वाणी बिना असर डाले चली जाए?

दादाश्री : आपका ध्यान नहीं रहे तो चली जाती है।

प्रश्नकर्ता : नहीं दादा, ध्यान रखा हो, पूरी तरह से ध्यान रखा होता है।

दादाश्री : समझ में नहीं आए तो चला जाता है। समझ में नहीं आए तो यों ही चला जाता है। इनमें से कितने ही लोगों का चला जाता होगा।

प्रश्नकर्ता : अत: इसमें यह मुख्य नहीं है कि कितना सुना। कितना समझ में आता है उसका महत्व है न?

दादाश्री : महत्व तो समझ में आए उतना ही है! जो सुना है वह भी गलत नहीं है न! कान में जाए तो कान पवित्र करती है।

प्रश्नकर्ता : अत: अगर समझ में आ गया और याद नहीं रहे तो?

दादाश्री : याद रखकर क्या करना है? दर्शन में आई हुई चीज़ को याद रखने की ज़रूरत नहीं है। उसे दर्शन कहते हैं। इससे तो आवरण टूटकर दर्शन में आता है। याददास्त तो स्थूल, बहुत ही स्थूल चीज़ है। अगर याद न रहें तो उसी का दर्शन खिलता है। यादवालों का दर्शन नहीं खिलता।

प्रश्नकर्ता : क्योंकि कुछ लोग पूछते हैं कि क्या सुना सत्संग में? तो कुछ याद नहीं आता।

दादाश्री : 'कुछ भी नहीं,' ऐसा कहना।

प्रश्नकर्ता : हाँ, इसलिए यह सभी थोड़ी-थोड़ी, कुछ-कुछ, नोट करने लगे, दादाजी। कुछ भी याद नहीं रहता।

दादाश्री : यानी कि यादशक्ति नहीं है, इसमें तो दर्शन में आता है सभी कुछ। देखने के बाद में प्रतीति बैठती है। प्रतीति यों ही नहीं बैठ जाती।

प्रश्नकर्ता : दर्शन में आने के बाद में प्रतीति बैठती है?

दादाश्री : हाँ, उसे लोग दर्शन नहीं कहते, लेकिन 'मुझे समझ में आ रहा है' ऐसा कहते हैं। फिर प्रतीति बैठती है।

सही समय पर हाज़िर हो जाए ऐसी वाणी

मेरे शब्द ऐसे हैं कि जो सीधे ही पहुँच जाते हैं और याद रह जाते हैं। शीलवान पुरुषों के शब्द हैं। ज्ञानीपुरुष की वाणी बहुत मज़बूत होती है। अगर खुद का रटा हुआ हो तो, वह तो सही समयपर भूल जाते हैं और अगर ज्ञानी की वाणी सुनी हो तो वह सही समय पर हाज़िर रहती है। ज्ञानीपुरुष की बात समझ ले तो बहुत आसान है, हमारा सुने तो अमल में आता ही है। एक बार तय कर ले, हमारा मार्गदर्शन मिलता है लेकिन उसे खुद के दरवाज़े खुले रखने पड़ेंगे। ऐसा है कि ज्ञानीपुरुष की बात यदि एक घंटे तक सुन ले तो भी समकित हो जाए। यह हमारी वाणी सुनकर व्यवहार समकित हो जाता है। इसे सुनकर तो मिथ्यात्व का मैल धुल जाता है और 'आत्मा कुछ अलग है,' ऐसा समझ में आता है। लेकिन यह है 'क्या है' ऐसा समझ में नहीं आता। जो मोक्ष दाता, मूर्तिमान मोक्ष स्वरूप हैं, जब ऐसे ज्ञानीपुरुष ज्ञान दें तब ऐसा भी समझ में आ जाता है कि 'आत्मा क्या है।' आत्मा अरूपी है और लोग उसे रूपी में ढूँढते हैं, तो कहाँ से मिलेगा?

हिन्दुस्तान में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है कि जो मूल आत्मा का एक अंश भी जानता हो। (और यहाँ मै हूँ) आत्मा क्या है, क्या नहीं है, वह बताता हूँ। पूर्णत्व बताता हूँ। वस्तुत्व देता हूँ। पूर्णत्व अर्थात् जगत् क्या है और क्या नहीं है। वस्तुत्व अर्थात् आत्मा क्या है और क्या नहीं है।

मोक्षानुगामी वाणी

प्रश्नकर्ता : आप्तवाणी में लिखा है कि यदि मेरा एक भी वाक्य कोई पकड़ ले तो मोक्ष में चला जाए, तो वह अक्रम मार्ग से या क्रमिक मार्ग से?

दादाश्री : अक्रम मार्ग से। इसका तो एक वाक्य घुस जाए, एक शब्द घुस जाए, तो वह शब्द मोक्ष में ले जाता है। शब्द काम करता रहता है। एक ही शब्द, वह वचनबलवाला होता है। दादा का यदि एक भी शब्द पकड़कर रखे न तो उस शब्द में इतना अधिक वचनबल है कि वह ठेठ मोक्ष में ले जाए, ऐसा है। शास्त्रकारों ने कहा है, ''ज्ञानी का एक भी शब्द पकड़कर रखें न, तो वह ठेठ मोक्ष में ले जाएगा।''

मोक्ष में जाने के लिए कईं शास्त्र की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि 'ज्ञानीपुरुष' सीधे पूरा मोक्ष मार्ग बता देते हैं। अत: वस्तु स्थिति में समझने की ज़रूरत है। जैसे-जैसे वस्तु समझ में आती जाएगी वैसे-वैसे वह पूर्णत्व की ओर जाता है। ज्ञानी का एक वाक्य तो

अनंत ज्ञानकला से भरा हुआ होता है, वह वाक्य तो अनुभव वाक्य कहलाता है। जैसी शास्त्रों में भी न लिखी हों ऐसी उनकी वाणी होती है और उस वाणी का हमें अनुभव होता है कि 'ओहोहो! कैसी सटिक वाणी है!'

'अहो!' कैसी कल्याणकारी वाणी!

अगर ज्ञानीपुरुष का एक शब्द समझ जाए न तो मोक्ष में चला जाए। किसका शब्द? ज्ञानी का। किसी की सलाह ही न लेनी पड़े कि किसकी भूल है? 'भुगते उसी की भूल।' जो तपता है उसी की भूल। यह एक नियम समझ गया तो पूरा मोक्ष मार्ग खुल जाएगा। यह तो बिल्कुल एक्ज़ेक्ट वाक्य निकला हुआ है। उसका उपयोग तो अगर अगली चौबीसी में भी किया जाए, तो भी कल्याण हो जाएगा। मेरा एक भी शब्द अगर आप तथारूप समझ गए होंगे तब भी मोक्ष है। मेरा एक-एक वाक्य वीतराग है।

''मेरा एक ही शब्द यदि कोई ले जाएगा तो वह मोक्ष में जाएगा।'' वह शब्द बड़े झाड़ के रूप में प्रकट होगा, क्योंकि हमारी वाणी तो हृदयस्पर्शी है। मेरे एक ही वाक्य से कोई संसारी सिर्फ दो ही सीढ़ियाँ चढ़े तो भी बहुत हो गया। जब मेरी वाणी सुने कि मैं क्या कहना चाहता हूँ, तो तब उसे हमारे कुछ दर्शन होते हैं और वह यदि अड़तालीस मिनट तक सुने तब तो काम ही *निकाल* दे। ज्ञानीपुरुष बोलते हैं न, तब देवी-देवता वहाँ पर हाज़िर हो जाते हैं। जिसे यह समझ में नहीं आए तो उसका क्या हो सकता है? ज्ञानीपुरुष (की बातें) बेकार जाती है। आपको कीमत समझ में नहीं आए, तो वह हीरा बेकार है।

आप्तवाणी का आराधन प्राप्त करवाएगा अंतिम दशा

इस आप्तवाणी को अगर अच्छी तरह पढ़ें, बारीकि से, तो बहुत अच्छी किताब है क्योंकि ज्ञानीपुरुष की साहजिक वाणी है, और यह एकांगी नहीं है और न ही आग्रही है।

हमारे इस पुस्तक का रोज़ अगर एक ही घंटा आराधन करेगा तो यह अंतिम दशा तक पहुँचा देगी क्योंकि निदिध्यासन किसका कर रहे हैं? ज्ञानीपुरुष द्वारा बोली गई वाणी का आराधन कर रहे हैं। हमारे वाक्यों का आराधन, वही तप है और वही धर्म, तो आपको निरंतर परमानंद रहेगा। हमारी मूर्ति स्थापित करके काम निकालने का प्रयत्न मत करना। और सभी प्रकार से आपका काम होता ही रहेगा।

ज्ञानीपुरुष का एक ही वाक्य यदि पच जाए तो ठेठ मोक्ष तक पहुँचा दे। सहवास की ही ज़रूरत है, अन्य किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। हमारी वाणी की भक्ति करे उसकी वाणी सुधरती है। अगर वर्तन की भक्ति करें तो वर्तन सुधरता है। शुद्धात्मा तो वही का वही है लेकिन प्रकाश बढ़ता जाता है।

व्यवहार किसे कहते हैं। नौ को नौ से भाग करना, यदि जो नौ को बारह से भाग करें तो व्यवहार कैसे चलेगा, न्याय क्या कहता है? नौ में बारह का भाग लगाओ। उससे फँस जाते हैं। न्याय क्या कहता है? नौ को दो से भाग लगाओ लेकिन किस तरह भाग लगाया जा सकता है? उसका जो व्यवहार है उसी से व्यवहार होता है। आज यह ग़ज़ब की बात निकली है। आपकी वाणी निकली है न, वह सामनेवाले के व्यवहार का अनुसरण करती है और उनकी जो वाणी निकलती है वह आपके व्यवहार का अनुसरण करती है (सामनेवाले की वाणी पर से खुद को नाप लेना है कि हम कहाँ खड़े हैं) यह बात वर्ल्ड की सबसे उच्चतम बात है। द्रव्य-क्षेत्र-काल और भाव के आधार पर निकली है। तमाम शास्त्रों के सार के रूप में निकला है यह वाक्य। यह विवरण करने योग्य है।

- जय सच्चिदानंद

क्रोध का शमन, किस समझ से?

कुछ लोग क्रोध को दबाते हैं। अरे, दबाने जैसी चीज नहीं है वह! क्रोध को पहचानकर दबा न! क्रोध दबाएगा तो, उसमें चार भैंसे हैं : क्रोध–मान–माया–लोभ! उसमें क्रोध के भैंसे को ज़रा दबाकर सँकरा करे न, तब मान का भैंसा अधिक मोटा हो जाता है! इससे क्या फायदा हुआ? मान का भैंसा बढ़ा। लोग तो एक भैंसे को दबाते हैं न? लेकिन ऐसा नहीं करना है। क्रोध क्या है? उसे पहचानने की ज़रूरत है।

क्रोध खुद ही अहंकार है। अब उसकी जाँच करनी चाहिए। जाँच करो कि वह किस प्रकार से अहंकार है। उसकी जाँच करें, तब पकड़ में आता है कि क्रोध अहंकार है। यह क्रोध क्यों उत्पन्न हुआ? तब कहे कि, 'इस बहन ने कप–प्लेट फोड़ दिए इसलिए क्रोध उत्पन्न हुआ।' अब कप–प्लेट फोड़ डाले, उसमें हमें क्या आपत्ति है? तब कहे कि, 'हमारे घर में नुकसान हुआ।' और नुकसान हुआ तो क्या उसे डाँट दें फिर? लेकिन अहंकार करना, डाँटना, वगैरह को अगर बारीकी से सोचा जाए तो सोचने से ही वह सारा अहंकार धुल जाएगा, ऐसा है। अब इन कप का टूटना, वह निवार्य है या अनिवार्य है? निवार्य संयोग होते हैं या नहीं होते? नौकर को सेठ डाँटता है कि, 'अरे, कप–प्लेट क्यों फोड़ डाले? तेरे हाथ टूटे हुए थे क्या? और तेरा ऐसा था और वैसा था।' यदि अनिवार्य हो तो क्या उसे डाँट सकते हैं? जमाई के हाथ से कप–प्लेट फूट गए हों तो वहाँ कुछ भी नहीं कहते! क्योंकि वह सुपीरियर है, वहाँ चुप! अगर इन्फीरियर हो वहाँ छिट् छिट् करता है! ये सब इगोइज़म हैं। सुपीरियर के सामने क्या सभी चुप नहीं हो जाते? इन दादा के हाथ से कुछ फूट जाए तो किसी के मन में कुछ आता ही नहीं और नौकर के हाथ से फूट जाए तो?

इस जगत् ने न्याय कभी देखा ही नहीं। नासमझी के कारण यह सब है। यदि समझदार बुद्धि होती न, तब भी बहुत हो चुका! बुद्धि यदि विकसित हो, समझवाली हो तो कहीं भी कोई झगड़ा होगा ही नहीं। अब झगड़ा करने से क्या कप–प्लेट जुड़ जाते हैं? सिर्फ संतोष मिलता है, उतना ही न? बल्कि कलह हो जाती है, वह अलग। मन में क्लेश हो जाता है, वह अलग। यानी इस व्यापार में तो एक तो प्याले गए वह नुकसान; दूसरा, यह क्लेश हुआ वह नुकसान और तीसरा, नौकर के साथ बैर बँधा वह नुकसान! नौकर बैर बाँधता है कि 'मैं गरीब हूँ,' इसीलिए ये मुझे अभी ऐसा कह रहे हैं न! लेकिन वह बैर छोड़ेगा नहीं और भगवान ने कहा है कि बैर किसी के भी साथ मत बाँधना। शायद कभी प्रेम बँधे तो बाँधना, लेकिन बैर मत बाँधना। क्योंकि प्रेम बँधेगा तो वह प्रेम अपने आप ही बैर को खोद डालेगा। प्रेम की कबर तो बैर को खोद डाले ऐसी है, लेकिन बैर की कबर कौन खोदेगा? बैर से तो बैर बढ़ता ही रहता है। इस प्रकार निरंतर बढ़ता ही रहता है। बैर के कारण ही तो यह भटकन है सारी! ये मनुष्य किसलिए भटकते हैं? क्या तीर्थंकर नहीं मिले थे? तब कहे, 'नहीं, तीर्थंकर तो बहुत सारे मिले थे। वहाँ गए थे, वहाँ बैठे थे। उनकी बात सुनी, देशना भी सुनी, लेकिन कुछ हुआ नहीं।'

किस–किस बात में अड़चनें आती हैं? कहाँ–कहाँ आपत्ति होती हैं? उन आपत्तियों को खत्म कर दो न! यदि आपत्ति होती है वह संकुचित दृष्टि है। तो 'ज्ञानीपुरुष' लोंग साइट दे देते हैं। उस लोंग साइट के आधार पर सबकुछ 'ज्यों का त्यों' दिखता है!

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

दादाई जगकल्याण मिशन – सत्संग हाइलाईट्स

९ – १६ अक्तूबर : न्युज़ीलेंड सत्संग के प्रथम दिन ऑकलेन्ड में महात्माओं को बोनस के रूप में अचानक पूज्यश्री के दर्शन का मौका मिल गया। यहाँ पर नॉन गुजराती मुमुक्षु / महात्माओं की संख्या अधिक होने के कारण हिन्दी में सत्संग आयोजित किया गया था। ज्ञानविधि में ८१ महात्माओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। उसके बाद लगभग ८० महात्माओं को क्वीन्सटाऊन रिट्रीट का अमूल्य लाभ मिला, जो उनके लिए ज़िंदगी की यादगार पलों में से एक था। वहाँ के एयरपोर्ट पर पूज्यश्री का स्थानिक परंपरागत 'माओरी' तरीके से स्वागत किया गया। महात्माओं ने कुदरती नयनरम्य द्रश्यों से भरपूर अलग–अलग जगहों का पूज्यश्री के साथ आनंद उठाया, जिसमें एरोटाउन, मिलफोर्ड साउन्ड, मिरर लेक वगैरह का समावेश किया गया था। १८वीं तारीख को वहाँ के विख्यात टॉय म्यूज़ियम तथा पज़लिंग वर्ल्ड में गए। कई महात्माओं ने कवारू ब्रिज पर बंजी जंपिग का साहस किया। १५वीं तारीख को विज़ेल टाउन में माउन्टकुल पर सफर करते हुए हेलीकॉप्टर राइड के दौरान पूज्यश्री बर्फ में उतरे थे। 'दादा–दरबार' में पूज्यश्री ने महात्माओं को सुखड़ी प्रसाद और मोमेन्टो भेंट के तौर पर दिए। वहाँ महात्माओं को अपने अनुभव कहने का और सत्संग का मौका भी मिला। १६वीं को सभी ने क्राईस्ट चर्च शहर में एन्टार्कटिका सेन्टर में खुद एन्टार्कटिका का अनुभव किया और प्रसिद्ध टेकापो लेक पर गए थे। १७वीं को महात्मा अविस्मरीणय यादों के साथ अपने घर वापस जाने के लिए निकले पड़े।

१८ – २१ अक्तूबर : सिंगापुर के एयरपोर्ट पर स्थानिक महात्माओं ने उत्साह पूर्वक पूज्यश्री का स्वागत किया। १८वीं को सुबह आप्तपुत्र सत्संग और शाम को पूज्यश्री के सत्संग के बाद महात्माओं ने पूज्यश्री की निश्रा में सिंगापुर सत्संग सेन्टर के १० वर्ष पूरे होने पर और दिवाली–अन्नकूट का उत्सव मनाया और गरबा किया था। ज्ञानविधि में १०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। २०वीं तारीख को महात्माओं को पूज्यश्री के साथ बीच पर जाने का अवसर प्राप्त हुआ। पूज्यश्री क्वोड–बाइसीकल पर बैठकर उस स्थल पर पधारे थे और महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ फ्रूट पार्टी तथा बीच पर वॉक की। शाम को ज्ञान लिए हुए महात्माओं के लिए फॉलोअप सत्संग में व्यवहारिक जीवन में ज्ञान सेट करने से संबंधित प्रश्न पूछे गए। अंतिम दिन सुबह स्थानिक महात्माओं को दादा–दरबार में पूज्यश्री के दर्शन–सत्संग का आनंद मिला।

२३ – २४ अक्तूबर : हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी पूज्यश्री ने दिवाली के दिन सुबह चोपड़ा–पूजन (बहीखातों का पूजन) संस्था की सभी प्रवृतियों और महात्माओं के लिए के लिए विशेष विधि की थी। सुवर्ण प्रभात सत्संग दौरान आप्तपुत्रों ने विदेश सत्संग प्रवास के अनुभव कहे थे। रात को त्रिमंदिर में आयोजित विशेष भक्ति कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महात्मा हाज़िर रहे और भक्तिरस में रंग गए। पूज्यश्री ने भी दो भक्तिपद गाए।

नूतन वर्ष की प्रभात पर त्रिमंदिर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान पूज्यश्री ने सर्व भगवंतों के पूजन–दर्शन के बाद परम–पूज्य दादा भगवान तथा पूज्य नीरू माँ को अन्नकूट का प्रसाद चढ़ाया था। 'ज्ञानदान आपवा आओ दादाजी जमवा पधारो...' (ज्ञानदान देने आओ दादाजी भोजन के लिए पधारो) रसगान के साथ एक के बाद एक खाने की चीज़ें प्रसाद के रूप में अर्पण की गई। तत्पश्चात पूज्य श्री द्वारा वर्ष २०१५ के केलेन्डर का उद्घाटन किया गया। आरती के बाद जाइजेन्टिक हॉल में दर्शन का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। पूज्यश्री ने नए वर्ष का संदेश देते हुए इस वर्ष के संदेश को भी दोहराया था कि करीबी सहाध्यायी फाइलों का समभाव से निकाल करो, इस पर जागृति रखकर उस ओर का पुरूषार्थ होना चाहिए। दर्शन के दौरान महात्माओं ने प्रार्थना–विधि, कीर्तन–भक्ति और पदगुंजन उपयोगपूर्वक किए थे।

१ – २ नवम्बर : त्रिमंदिर संकुत के दादानगर में आयोजित सत्संग–ज्ञानविधि कार्यक्रम के दौरान १५०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। दिल्ली से आए हुए एक मुमुक्षु भाई ने कहां कि मेरी ५५ वर्ष की ज़िंदगी में हमेशा मांसाहार

ही किया है, लेकिन आज से मैं निश्चय करता हूँ कि हमेशा के लिए उसे त्याग दूँगा। मुंबई से आए हुए एक भाई ने खुद का अनुभव बताते हुए कहा कि टी.वी. पर अचानक पूज्यश्री का सत्संग देखा और तब से हररोज़ देखने का नियम बन गया था। आज लग रहा है कि मेरे अनंत जन्मों से इधर-उधर घूमने का अंत आ गया।

५ - ९ नवम्बर : परम पूज्य दादा भगवान की १०७वीं जन्मजयंती का महोत्सव कच्छ के गांधीधाम शहर में बहुत भव्यता और आनंद-उल्लास पूर्वक संपन्न हुआ। ५ तारीख को उद्घाटन समारोह में पूज्यश्री महोत्सव के स्थल पर खुली कार में कतार में खड़े हुए सभी महात्माओं को दर्शन देते हुए स्टेज पर पधारे। दीप प्रागट्य के बाद १०७ गुब्बारे हवा में उड़ाकर, आर्शीवचन देते हुए महोत्सव का उद्घाटन किया। कच्छ के लगभग १०० छोटे-बड़े बच्चों ने विशेष तौर पर बनाए गए भक्ति पद पर सुंदर नृत्य प्रस्तुत किए। छः तारीख को जन्मजयंति के दिन विशेष संदेश के बाद पूज्य श्री ने जगत् कल्याण की भावना के लिए सामायिक करवाई। स्वामी और दादाश्री के पूजन-आरती के बाद दर्शन का कार्यक्रम शुरू किया गया, जो रात ११ बजे तक चला था। शाम ५:३० बजे गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने खास तौर पर उपस्थित रहकर पूज्यश्री के आर्शीवाद लिए थे और हज़ारों लोगों के सामने लोक कल्याण के लिए अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। महोत्सव के दौरान 'साधक, मोक्ष का ध्येय का,' 'मतभेद का कारण, वारण, निवारण,' 'बिखरी हुई चित्तवृत्तियों को वापस लाना' वगैरह विषयों पर विशेष सत्संग तथा जनरल प्रश्नोत्तरी हुई। अंतिम दिन अयोजित ज्ञानविधि में ३७५० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। थीमपार्क में दो नई थीम (थ्री डी प्रोजेक्शन थीम के साथ) और चिल्ड्रन पार्क में भी दो नई थीम रखी गई थीं। स्थानिक लोगों ने निःशुल्क ऐसे भव्य आयोजन को देखकर बहुत प्रशंसा की। लगभग २८०० सेवार्थी महात्माओं ने सेवा दी। पूज्य श्री ने घोषणा की कि अगली जन्मजयंती पूना में होगी। सेवार्थी सत्संग के दौरान महात्माओं ने बहुत सुंदर अनुभव कहे। 'नीलोफर' आँधी की भयानक आगाही और भारी वर्षा की आगाही के बीच सभी महात्माओं की कीर्तन भक्ति, दादा के आशीर्वाद और देवी-देवताओं की कृपा से यह महोत्सव 'निर्विघ्न' पूर्ण होने की भावना फलित हुई। सभी को अद्भुत चमत्कार का अनुभव हुआ।

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को **'दादावाणी'** पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. **8155007500** पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

मुख्य सेन्टरों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिरः (079) 39830100, **अहमदाबादः** (079) 27540408, **वडोदरा : (दादा मंदिर)** 9924343335, **राजकोट त्रिमंदिरः** 9274111393, **भूज त्रिमंदिरः** (02832) 290123, **गोधरा त्रिमंदिरः** (02672) 262300, **मुंबईः** 9323528901, **दिल्लीः** 9310022350, **बैंगलूरः** 9590979099, **कोलकताः** 033-32933885, **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **यु.एस.ए.-केनेडाः** +1 877-505-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलियाः** +61 421127947, **केन्याः** +254 722722063

अमरेली त्रिमंदिर का प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

दि. ८ फरवरी २०१४ (रविवार)

प्राणप्रतिष्ठा विधि : सुबह १० से १-३०

प्रक्षाल-पूजन-दर्शन-आरती : शाम ४ से ७

भक्ति : रात ८-३० से १०

स्थल : अमरेली त्रिमंदिर, लीलीया रोड बायपास चोकडी, श्यामवाडी के पास. **संपर्क :** 9924080645

विशेष सूचना :

१) प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम केवल एक दिन का होने की वजह से आवास सुविधा उपलब्ध नहीं है। जो महात्मा-मुमुक्षु उसी दिन सीधे ही महोत्सव स्थल पर पहुँचेंगे, उनके लिए बाथरूम-टोइलेट की सुविधा स्थल पर रहेगी।

२) कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अपने नजदिकी सत्संग केन्द्र पर रजिस्ट्रेशन अवश्य करवाएँ।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'आस्था'** पर हर रोज़ रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' - बिहार** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० तथा रविवार शाम ५-३० से ६ (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' - भोपाल** पर सोम से शुक्र दोपहर ३-३० से ४ (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' - गुजरात-गिरनार** पर हर रोज़ सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)

USA - **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)

Dubai - **'सब टीवी'** पर हर रोज़ सुबह ३ से ३-३० (हिन्दी में)

Australia - **'सब टीवी'** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३० (हिन्दी में)

New Zealand - **'सब टीवी'** पर हर रोज़ दोपहर १२ से १२-३० (हिन्दी में)

USA-Canada-UK-Singapore - **'सब टीवी'** पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर मंगलवार से शुक्रवार सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)**
- **'साधना'** पर हर रोज़ शाम ७-१० से ७-४० (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार** पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात ८-३० से ९ (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन-सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (मराठी में)

USA - **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह ११ से ११-३० EST

UK - **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह ८-३० से ९ (गुजराती में)

Singapore - **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)

Australia - **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में)

New Zealand - **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)

USA-UK-Africa-Aus. - **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

आप्तवाणी-3 तथा 7 (गुजराती) पर सत्संग शिविर (पारायण)

दि. **२० से २७ दिसम्बर** - सुबह ९-३० से १२-४५ तथा शाम ४-३० से ७, रात ८-३० से ९-३० (सामायिक)

दि. **२८ दिसम्बर** - सुबह ९-३० से १२ - **श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

2) हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। आनेवाले महात्माओं से निवेदन है कि आपकी सुविधा के लिए अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए। अगर आपके मोबाइल में एफएम सुविधा है, तो उस पर भी आप भाषांतरित सत्संग सुन सकते हैं।

गांधीनगर

दि. **३ जनवरी** (शनि), शाम ६-३० से ९ - **सत्संग** तथा **४ जनवरी** (रवि), शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**

दि. **५ जनवरी** (सोम), शाम ६-३० से ९ - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : च-3 सर्कल ग्राउन्ड के पास, बस डिपो के पीछे, सेक्टर-11, गांधीनगर (गुजरात). **संपर्क :** 9624004045

मुंबई

दि. **३०-३१ जनवरी** (शुक्र-शनि), शाम ६-३० से ९ - **सत्संग** तथा **१ फरवरी** (रवि), शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**

स्थल : आझाद मैदान, महानगर पालिका रोड, BMC हेड ओफिस सामने, CST (VT)स्टेशन सामने. **संपर्क :** 9323528901

दि. **२ फरवरी** (सोम), शाम ६-३० से ९ - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : बिरला मातुश्री सभागृह होल, बिल्डींग नं-19, मरीन लाईन्स, बोम्बे होस्पिटल के पास . **संपर्क :** 9323528901

भावनगर

दि. **३ फरवरी** (मंगल), रात ७-३० से १० - **सत्संग** तथा **४ फरवरी** (बुध), शाम ६-३० से १० - **ज्ञानविधि**

स्थल : गुलिस्ता मैदान, वाघावाडी रोड, भावनगर (गुजरात). **संपर्क :** 9924344425

दि. **५ फरवरी** (गुरु), रात ७-३० से १० - **आप्तपुत्र सत्संग**

अमरेली

दि. **६ फरवरी** (शुक्र), रात ८ से १०-३० - **सत्संग** तथा **७ फरवरी** (शनि), शाम ७ से १०-३० - **ज्ञानविधि**

स्थल : अमरेली त्रिमंदिर, लीलीया रोड बायपास चोकडी, श्यामवाडी के पास (गुजरात). **संपर्क :** 9924080645

वडोदरा

दि. **२०-२१ फरवरी** (शुक्र-शनि), रात ७ से ९-३० - **सत्संग** तथा **२२ फरवरी** (रवि), शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**

दि. **२३ फरवरी** (सोम), रात ७ से ९-३० - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : बा-बापुजी उद्यान, समता ग्राउन्ड, सुभानपुरा, वडोदरा (गुजरात). **संपर्क :** 9924343335

वलसाड

दि. **२४ फरवरी** (मंगल), शाम ६ से ८-३० - **सत्संग** तथा **२५ फरवरी** (बुध), शाम ५ से ८-३० - **ज्ञानविधि**

दि. **२६ फरवरी** (गुरु), शाम ६ से ८-३० - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : तडकेश्वर मंदिर ग्राउन्ड, फ्लाय ओवर ब्रीज के पास, अब्रामा, वलसाड (गुजरात). **संपर्क :** 9924343245

सुरत

दि. **२७-२८ फरवरी** (शुक्र-शनि), रात ८ से १०-३० - **सत्संग** तथा **१ मार्च** (रवि), शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**

दि. **२ मार्च** (सोम), रात ८ से १०-३० - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : SMC पार्टी प्लोट, उमरा पुलिस स्टेशन के पास, अठवालाईन्स, सुरत (गुजरात). **संपर्क :** 9574008007

दिसम्बर २०१४
वर्ष-१० अंक-२
अखंड क्रमांक - ११०

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 31-12-2014
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

मोक्ष में जाना हो तो ज्ञानी के शब्दों को समझकर पचाओ

इस जगत् में डाँट कौन सकता है? सिर्फ ज्ञानी-पुरूष ही ऐसे हैं, जो सभी को डाँट सकते हैं। ज्ञानीपुरूष इस दुनिया में किसी के दबाव में नहीं आते। मेरी बात थोड़ी मुश्किल है, लेकिन जुलाब (दस्त) लगाकर अंदर से पूरा रोग निकाल देती है। यह तो निरा रोग भरा हुआ है! अनंत काल का रोग जो नाभि से लेकर गले तक भर गया है। अब मुझे ऑपरेशन करके, अंदर चिमटा डालकर यह रोग निकालना पड़ेगा। इसलिए पहले से ही कह देना। एक बार चिमटा डालने के बाद ऑपरेशन अधूरा नहीं छोड़ा जा सकेगा, फिर 'ओ-ओ' करोगे तो नहीं चलेगा। तो फिर आपको क्या चाहिए? मोक्ष या संसार का वैभव? जो चाहिए वह देने के लिए हम तैयार हैं। आपको यदि वास्तव में मोक्ष में जाना हो, तो मेरे कडक शब्दों को सुनना पड़ेगा। हमारे इन शब्दों को पचाना पड़ेगा, समझना पड़ेगा।

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.